परमेश्वर

...की सन्तान कैसे बने

वटिनेस एडशिन

शामलि है: **हाऊ हव दू टैल योर स्टौरी और हाऊहव दू बी ए सॉलशोल वन्निरि वनिर**

परमेश्वर की सन्तान कैसे बने

डेविड होवैल

कोपीराइट 2013 डेविड होवैल द्धारा
सारे अधिकार सुरक्षित। डेविड होवैल की ओर से
लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा,
किसी भी रूप में छपाया नहीं जा सकता।

इस शीर्षक को प्रचार और शिक्षा के लिए
थोक में खरीदा जा सकता है।
कृप्या अधिक जानकारी के लिए प्रकाशक से सम्पर्क करें।

Prison Evangelism
PO Box 571977
Houston, Texas 77257
davidhowell@prisonevangelism.com
info@HowtobeaChildofGod.com
www.HowtobeaChildofGod.com

जब तक अन्यथा निर्दिष्ट न किया गया हो, समस्त शास्त्र वचन,
हिंदी बाईबिल, सहज-पठनीय-रूपांतरण कॉपीराइटौ 2010 वर्ल्ड
बाइबिल ट्रान्सलेशन सेन्टर से लिए गए हैं। क्या आप इन्हें
परिवर्तित करना चाहेंगे।

आई एस बी एन 978-0-578-14157-2
कला निर्देशन जॉन मैगी हौस्टन टैक्सास द्धारा।
JohnMageeDesign.com

सभी चित्र रैंडी रोजर्स, द वुड़लैंड टैक्सास द्धारा।
artistguy@att.net

परिचय

वास्तव में, यदि हमें आरम्भ में ही मसीह और उसके क्रूस की पूर्ण प्रस्तूति दी जाए; तो हम, हमारे मसीहीयत जीवन के पहले ही दिन से अच्छी तरह से, अनुभव के एक महान स्तर में कदम रख सकते हैं; हालांकि ज्यादातर इसका पूरा विवरण बाद में होता रहता। वॉचमैन नी, द नोरमन क्रिश्चन लाईफ।

हम यीशु मसीह पर प्रभु, परमेश्वर, उद्धारकर्ता और जीवन के रूप में भरोसा रखते हैं; और हम उससे विनती करते हैं, कि वह हमारे जीवन और इच्छा पर अधिकार कर ले। वास्तव में, वह हमारा जीवन बन जाता है और हम तबदील हो जाते हैं; कई बार जल्दी से; और कई बार धीरे-धीरे, परन्तु बदलाव हमेशा आता है। परमेश्वर का आत्मा हममें निवास करने आता है; जो हमें पूर्ण, सजीव और सम्पूर्ण बनाताहै। जब हम परमेश्वर पर विश्वास करते और अपना हृदय, उसे देते हैं फिर जीवन कभी भी पहले जैसा नहीं रहता।

डेविड होवैल

परमेश्वर स्वर्ग में था और एक मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आया।

फिलिपियो 2:6-8, यूहन्ना 1:14, इब्रानियों 1:3, रोमियो 8:3दुसरा भाग, युहन्ना 10:30,
कुलुसियो 1:15, कुलुसियो 2:9, इब्रानियों 2:11-17, मत्ती 1:20-21

वह अद्‌भुत रीति से गर्भ में आया, परन्तु हमारी ही तरह एक स्त्री से उसका जन्म हुआ।

उसने ऐसा इसलिए किया कि हम उससे व्यक्तिगत रिश्ता बना सके; और उसे मनुष्य और परमेश्वर के रूप में जान सकें; और उससे भी अधिक, एक पिता के रूप में उसे समझ सकें।

यीशु का बचपन बीता, फिर उसने किशोरावस्था में प्रवेश किया; व्यवसाय सीखा। जब उसका समय आया, तो उसने उस सेवा को आरंभ किया, जिसके लिए उसका यहाँ आना हुआ था कि स्वयं को परमेश्वर और उद्धारक के रूप में हम पर प्रकट कर

मत्ती 3:13-17, मत्ती 7:28-29, मरकुस 6:2-3, लूका 2:40, लूका 2:41-47, लूका 2:52

जब उसका पृथ्वी पर का उदेश्य पूरा हुआ; उसने होने दिया कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।

उसे अपमानित किया और यातनाएं दी और फिर उसे क्रूस पर जड़ दिया। यीशु ने क्रूर मृत्यू से मरने का चुनाव किया ताकि मुझे और आपको हमारे गुनाहों का दंड न भुगतना पड़े। वह चाहते थे कि हम उसके साथ पहचाने जाएं और जानें कि उसने क्या कुछ सहा।

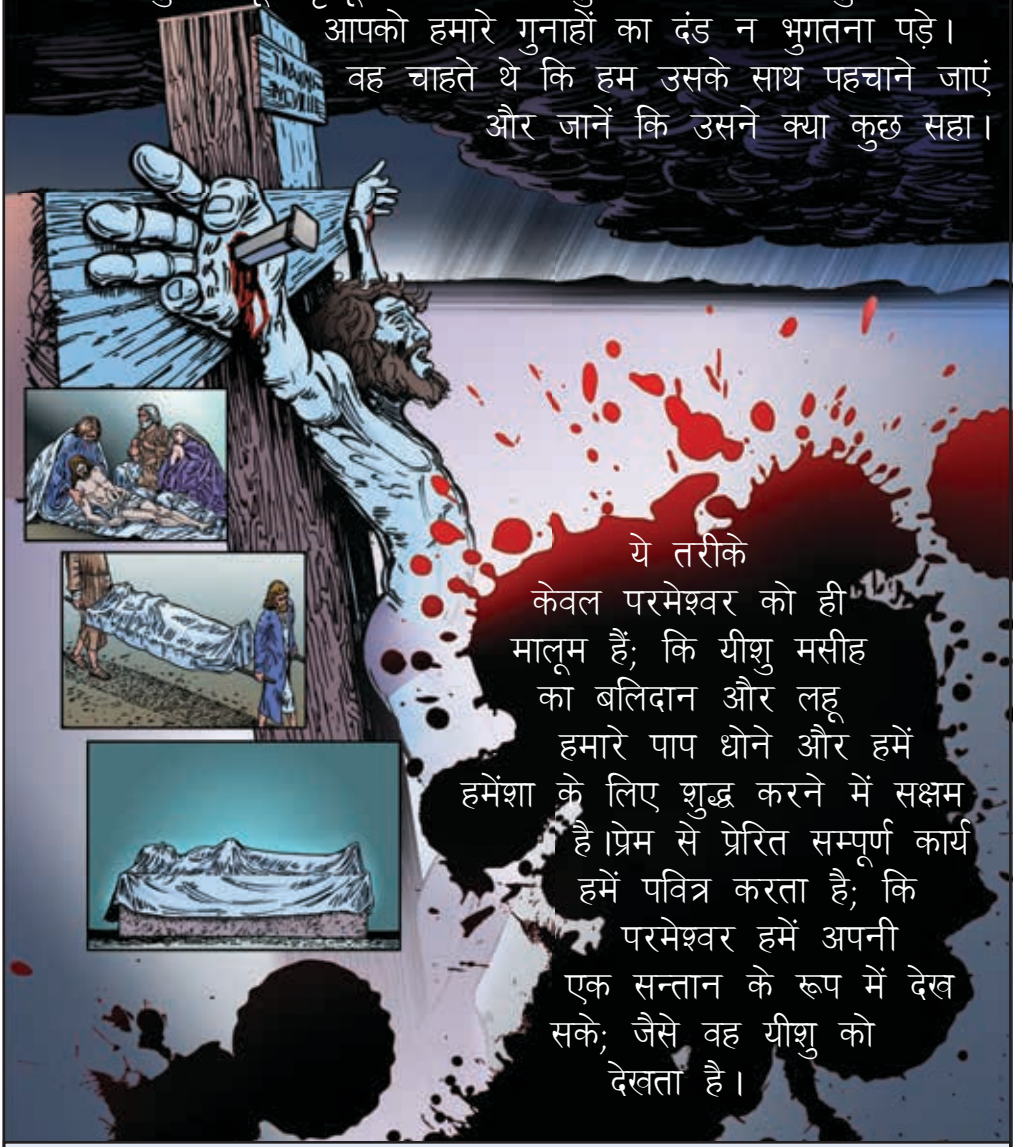

ये तरीके केवल परमेश्वर को ही मालूम हैं; कि यीशु मसीह का बलिदान और लहू हमारे पाप धोने और हमें हमेंशा के लिए शुद्ध करने में सक्षम है।प्रेम से प्रेरित सम्पूर्ण कार्य हमें पवित्र करता है; कि परमेश्वर हमें अपनी एक सन्तान के रूप में देख सके; जैसे वह यीशु को देखता है।

मत्ती 26:28, मती 27:57-61, रोमियों 5:6, रोमियों 8:3, इफिसियो 1:7, इब्रानियों 2:14-15, इब्रानियों 9:22, 1पतरस 2:24, 1यहुन्ना 1:7

यीशु इसलिए आया कि हम उसके साथ व्यक्तिगत संबंध स्थापित कर सकें; और वह अपने अनंत जीवन का हमें दान दे। अनंत जीवन मसीह का जीवन है। **इसका न तो कोई आदि और न ही कोई अन्त है।**

लूका 24:1-7, लूका 24:50-51, यूहन्नो 16:28, इब्रानियों 1:3

यह सब जरूरी क्यों था? इसलिए कि जब परमेश्वर ने पहले मनुष्य आदम की रचना की, उसने उसे अदन में अदभुत जीवन दिया, परन्तु आदम ने अपने स्वर्गीय पिता की आज्ञा का उल्लंघन किया।

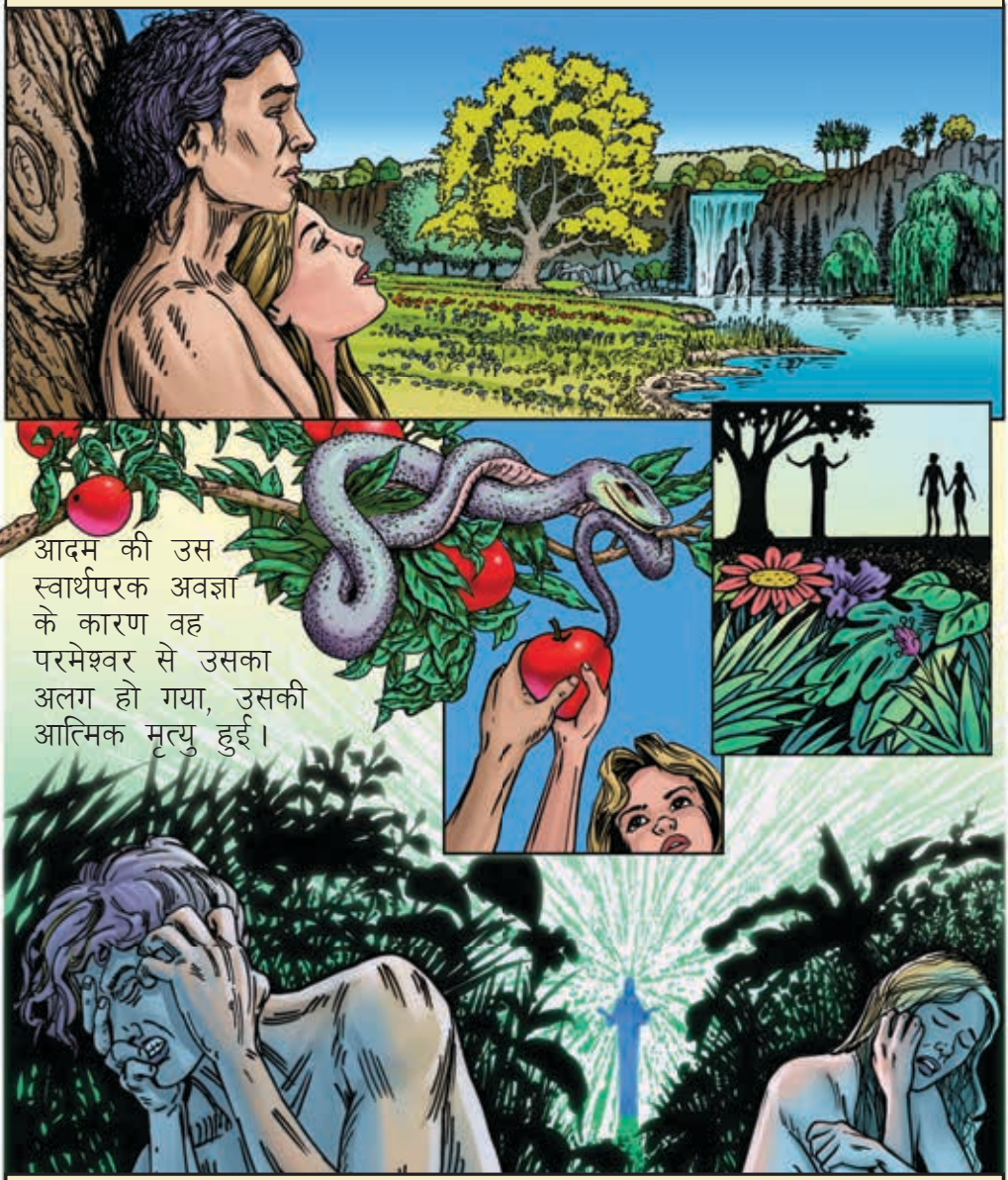

उसी क्षण से मनुष्य को देह और प्राण अर्थात व्यक्तित्व प्राप्त हुआ परन्तु आत्मिक रीति से वह परमेश्वर के लिए मृत था। वह अपने में सम्पूर्ण नहीं था, इसलिए वह परमेश्वर के उन आशीषों को अनुभव नहीं कर पाया जो उसके लिए थी।

अपने माता पिता के एक बच्चे होने के कारण हम आदम के परिवारिक वंश से हैं और हम भी आदम के साथ अदन की वाटिका में आत्मिक रीति से मृत हैं।

हम उस वंश के पाप का बोझ, स्वंय के पापों का बोझ और इस धरती पर अपने जीवन भर का भावनात्मक बोझ हम उठाए हुए हैं। यह कचरे का एक ऐसा थैला है; जिसमें शर्म, ग्लानि, पूर्व की समस्या, अपने पाप और चरित्र दोष हैं। हमें एक नए वंश और नए परिवार की आवश्यकता है।

रोमियों 3:23, रोमियों 5:12, रोमियों 5:18 पहला भाग।

एक दिन किसी व्यक्ति आकर हमें यीशु की कहानी बताई कि कैसे वे हमारे पापों के लिए मरे और हर एक को मृत्यु से बचाने और अनंत जीवन देने आए। यीशु मर गए और हमें मुक्ति का मार्ग दिखा गए; ऐसा मार्ग, जिससे हमें उनके द्वारा सम्पूर्ण क्षमा, बिना शर्त प्रेम, और अनंत जीवन मिलता है।

यहेजकेल 36:26-27, प्रेरितों के काम 4:12, रामियों 5:9, 1कुरिन्थियों 15:57, 2कुरिन्थियों 5:18 पहला भाग, गलातियों 1:15:16, इफिसियो 2:8-9, 2तीमुथियस 2:5-6

यीशु इसलिए भी आए कि आप और मैं उसके साथ संबंध के द्वारा इस पृथ्वी पर अब शान्ति और बहुतायत का जीवन पा सके।वे हमें रास्ता दिखाना चाहते हैं; कि जीवन की समस्याओं से कैसे निपटना है। यीशु जीवन जीने के लिए आशा और नए तौर-तरीकों को समझाते हैं। हमारे प्राकृतिक तौर-तरीके हमे आत्मलीन और उथल-पुथल में रखते है। इन तौर-तरीकों से काम नहीं बना है।

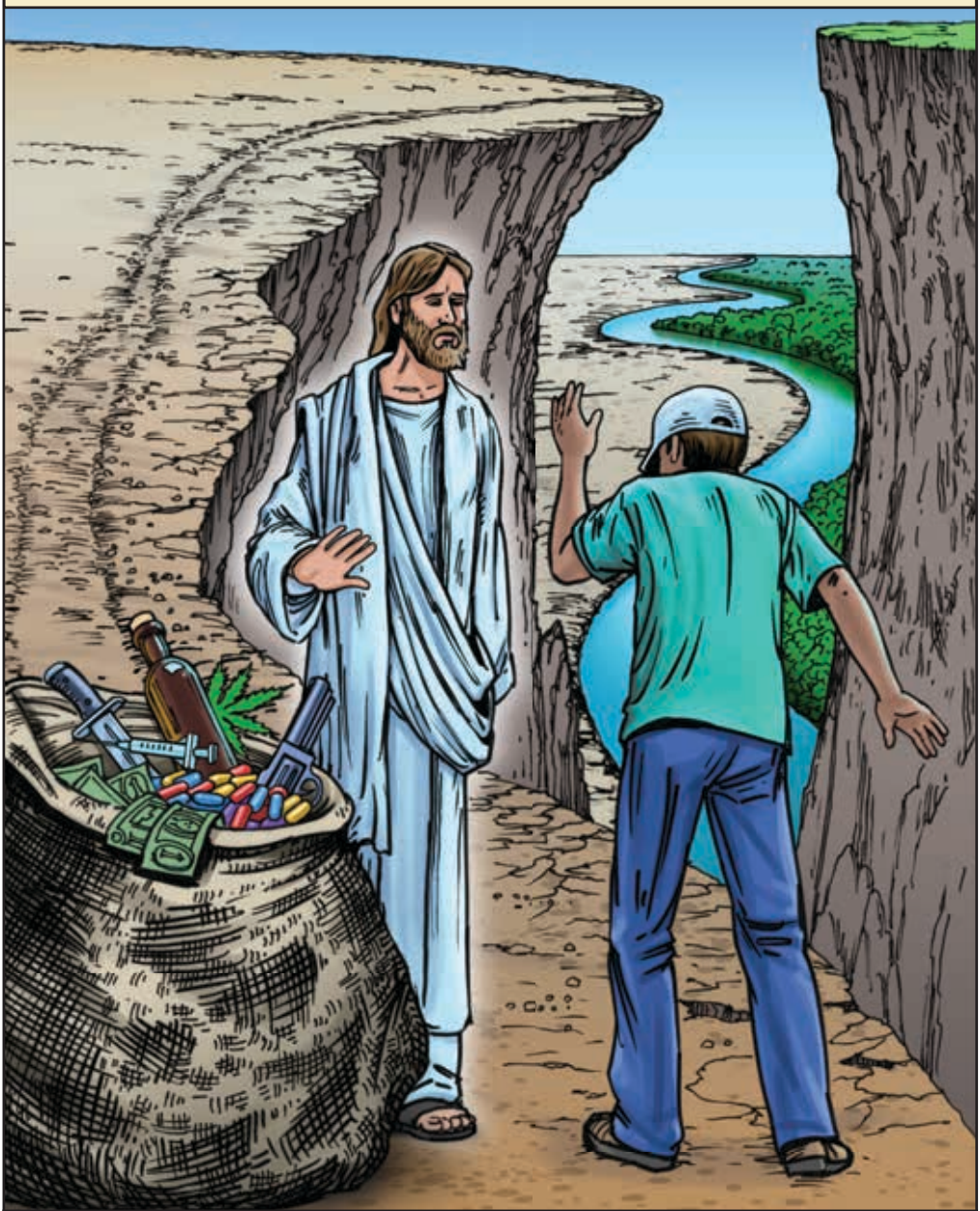

 युहन्ना 10:10, रोमियों 6:16, रोमियों 6:21, रोमियों 8:37, इफिसियो 2:14, प्रकाशितवाक्य 3:20

जब तक हम परमेश्वर से अलग हैं; हमारे पास शान्ति हो ही नहीं सकती। प्रत्येक दिन हम जो भी चुनाव करते हैं; वे स्वयं पर केन्द्रित होते हैं और निराशा में परमेश्वर के साथ सहभागिता करने से वे हमें अलग रखते हैं। हमारे पास एक गहरी जिज्ञासा होती है कि हम अपने परमपिता के साथ मेल करके एक हो जाएं परन्तु आत्मिक संपर्क की कमी के कारण हमारी अपनी उत्तम सोच और अच्छे इरादे ही हमें इस झंझट में डाल देते हैं।

सभोपदेशक 3:11, रोमियो 6:16, लूका 1:78-79, युहन्ना 16:33, रोमियो 5:1-2, रोमियों 8:6

हम उस खाई को भरने की कोशिश करते हैं; जो हमें परमेश्वर से अलग करती है; और हम परमेश्वर से सम्बन्ध स्थापित करने के तरीको की खोज करते हैं। कोई भी तरीका काम नहीं करता; केवल यीशु पर भरोसे के द्धारा ही हम परमेश्वर पिता के साथ जुड़ सकते हैं।

नीतिवचन 14:12, रोमियों 6:23, रोमियों 3:23

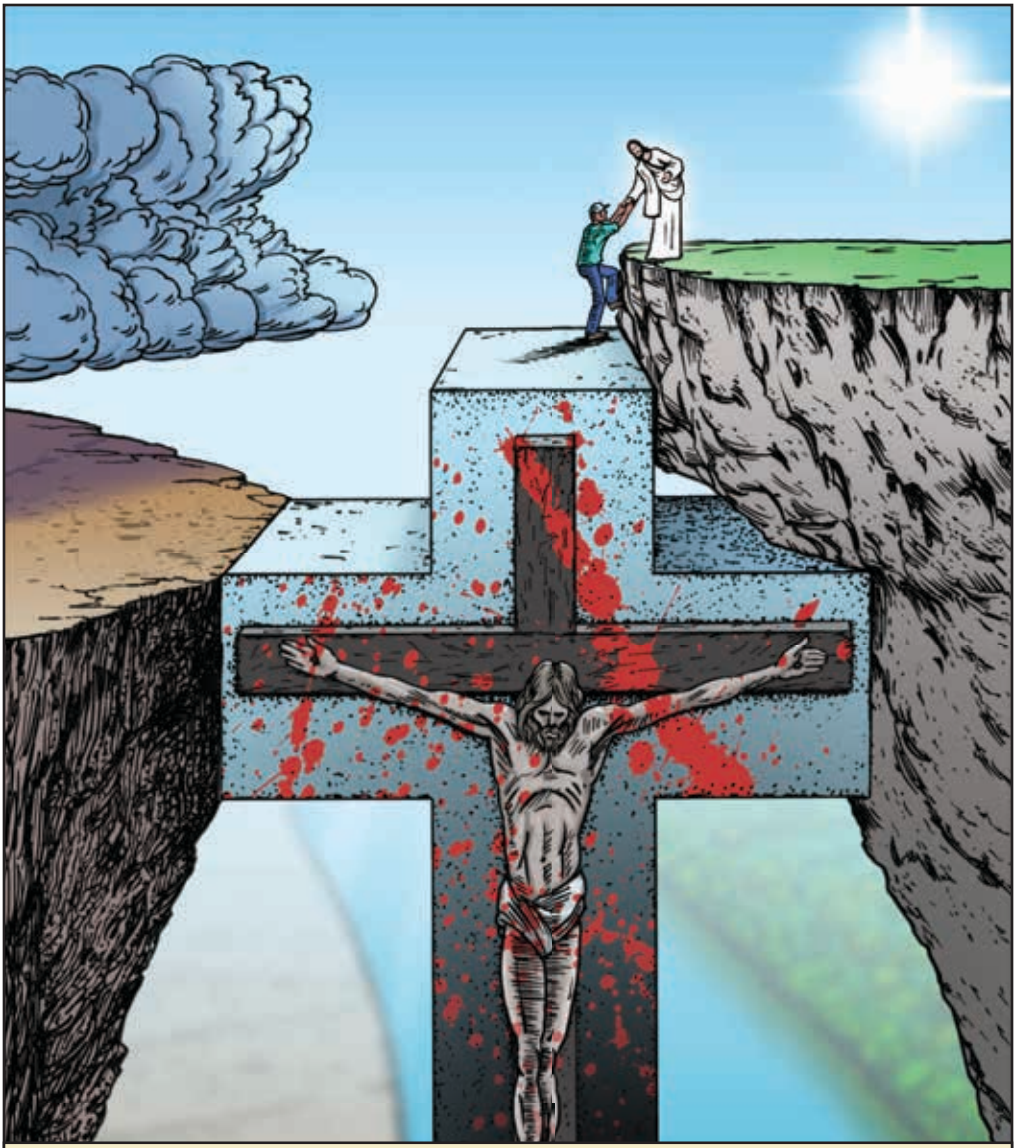

ये वही यीशु हैं; जो हमारे भूत, वर्तमान और भविष्य के पापों, गलतियों और गुनाहों के लिए मर गए। उनके रक्त से हम शुद्ध और परमेश्वर के सामने पवित्र किए गए। हम परमपिता परमेश्वर से सम्पूर्ण क्षमा, बिना शर्त प्रेम प्राप्त कर सकते हैं। अपने मृत्यू और अपने जी उठने से यीशु ने मनुष्य और परमेश्वर के बीच की खाई भर दी, इसलिए वे जगत के उद्धारक हैं।

युहन्ना 3:16, 1पतरस 3:18, 1 तीमुथियस 2:5-6, रोमियों 5:1

हम सब के पास एक अवसर है; कि हम इस सत्य को स्वीकार या अस्वीकार करें। यदि हम इन घटनाओं को, सच्चाई मानते हुए स्वीकार करते हैं और यीशु पर भरोसा करते हैं कि वे परमेश्वर हैं; तो हम उन सब अधिकार और सौभाग्य के साथ परमेश्वर की संतान बनते हैं, जो यीशु के हैं। हम यीशु के सह-उत्तराधिकारी और उनके भाई-बहन बन जाते हैं। अपनी इच्छा और अपने जीवन को उसकी ओर जोड़े अर्थात अर्पित करें। यह जटिल नहीं है, परन्तु हो सकता है कि यह आपके द्वारा किए गए सबसे कठिन कार्यों में से एक हो। यदि आप सचमुच परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और उसके साथ सहभागिता का अनुभव करना चाहते हो; उससे प्रार्थना करें कि वह आपके जीवन पर अधिकार कर ले। यदि आप ईमानदार हैं, तो एक साधारण प्रार्थना काफी है; क्योंकि परमेश्वर हृदय की शुद्धता को देखता है । अपने आप को इस प्रार्थना के द्वारा उसे सौंप दें।

इसके लिए आपको केवल विश्वास और भरोसा चाहिए!

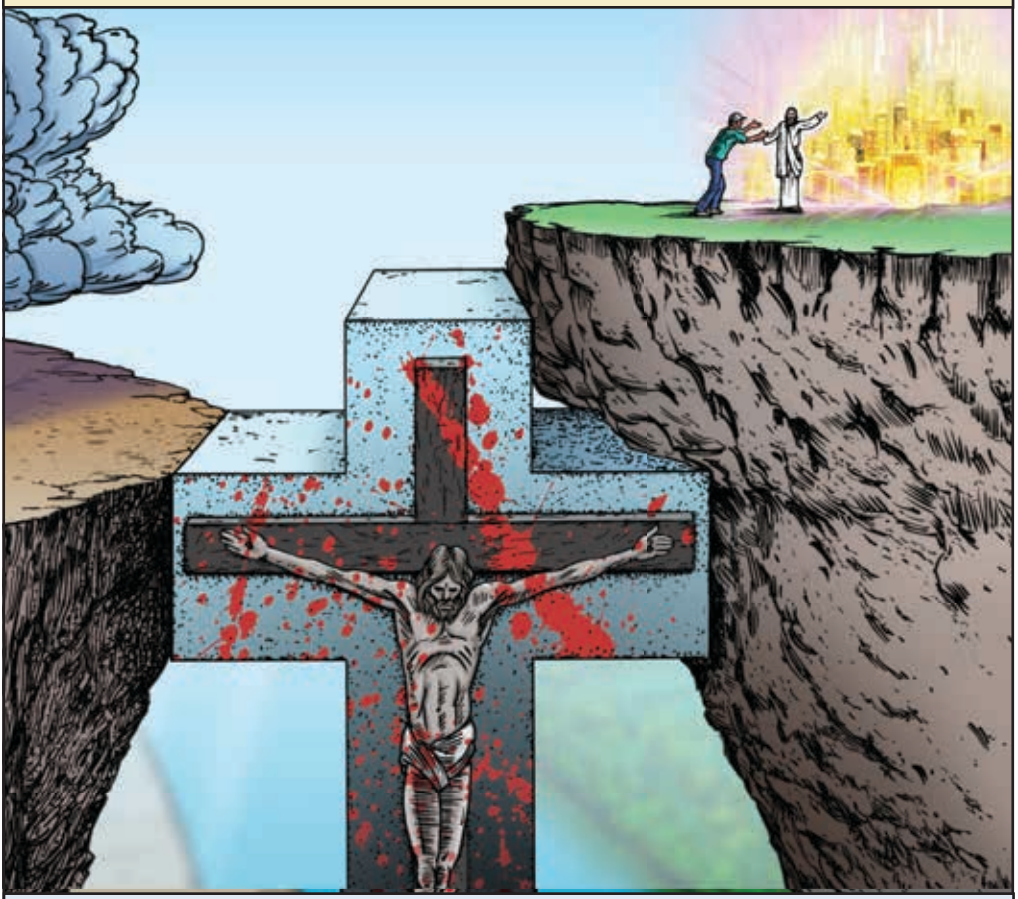

इफिसियों 2:13, युहन्ना 14:6, इब्रानियों 4:3, इब्रानियों 4:7-11

पिता, मैं, स्वयं को आपके हवाले करता हूँ, मुझे बदल दें और मुझम
ें अपनी इच्छा पूरी करें। मेरे जीवन को नियंत्रित करें;
और इस स्वार्थपूर्ण जीवन से मुझे मुक्ति दें; कि मैं आपकी
इच्छा पूरी कर सकूँ। मेरे पापों पर मुझे विजय दे
कि मैं उन लोगों के लिए उदाहरण बन सकूं जिन्हे मैं
आपकी सामर्थ और प्रेम से मदद कर सकूं। आपका जीवन के तौर
-तरीकों के लिए अपना मैं जीवन समर्पित करता हूं। अम
ेरी मदद करें, मैं आप पर भरोसा कर सकूं और हमेशा
आपकी इच्छा पूरी कर सकूं। प्रभु यीशु, आओ, और
मुझमें वास करो ।
आमिन।

अपने मुँह से अंगीकार करें और हृदय में विश्वास रखें कि यीशु मरे, दफन हुए और फिर जी उठे। उस पर भरोसा करें; कि वह प्रभु, उद्धारक और परमेश्वर है जो शरीर में होकर आए। और यीशु के साथ परमेश्वर की सन्तान और सह-उत्तराधिकारी बने।

यूहन्ना 11:25-26, यूहन्ना 14:6-7, रोमियों 10:9, रोमियों 10:13,
1कुरिन्थियों 6:17, इफिसियो 1:5-8, 15 इफिसियो 2:8-10, कुलुसियो 2:6-7, 1यूहन्ना 5:12-13

जब आप परमेश्वर के आत्मा को ग्रहण करते हैं, तो आप सम्पूर्ण और परमेश्वर के लिए जीवित हो जाते हैं।

जब आप यीशु मसीह को अपने जीवन में आमंत्रित करते हो; तो आप इस पृथ्वी के आदम के वंशज से बदल कर मसीह के अनंत जीवन में प्रवेश कर जाते हो। **वह जीवन जो आदि में था और भविष्य में भी हमेशा रहेगा**। आप मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए और पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर मर गया।

रोमियों 5:18-19, रोमियों 8:1-2, 1कुरिन्थियो 15:22, गलातियों 5:24, इफिसियो 1:13:14, इफिसियो 3:14-15, 1पतरस 1:18-19

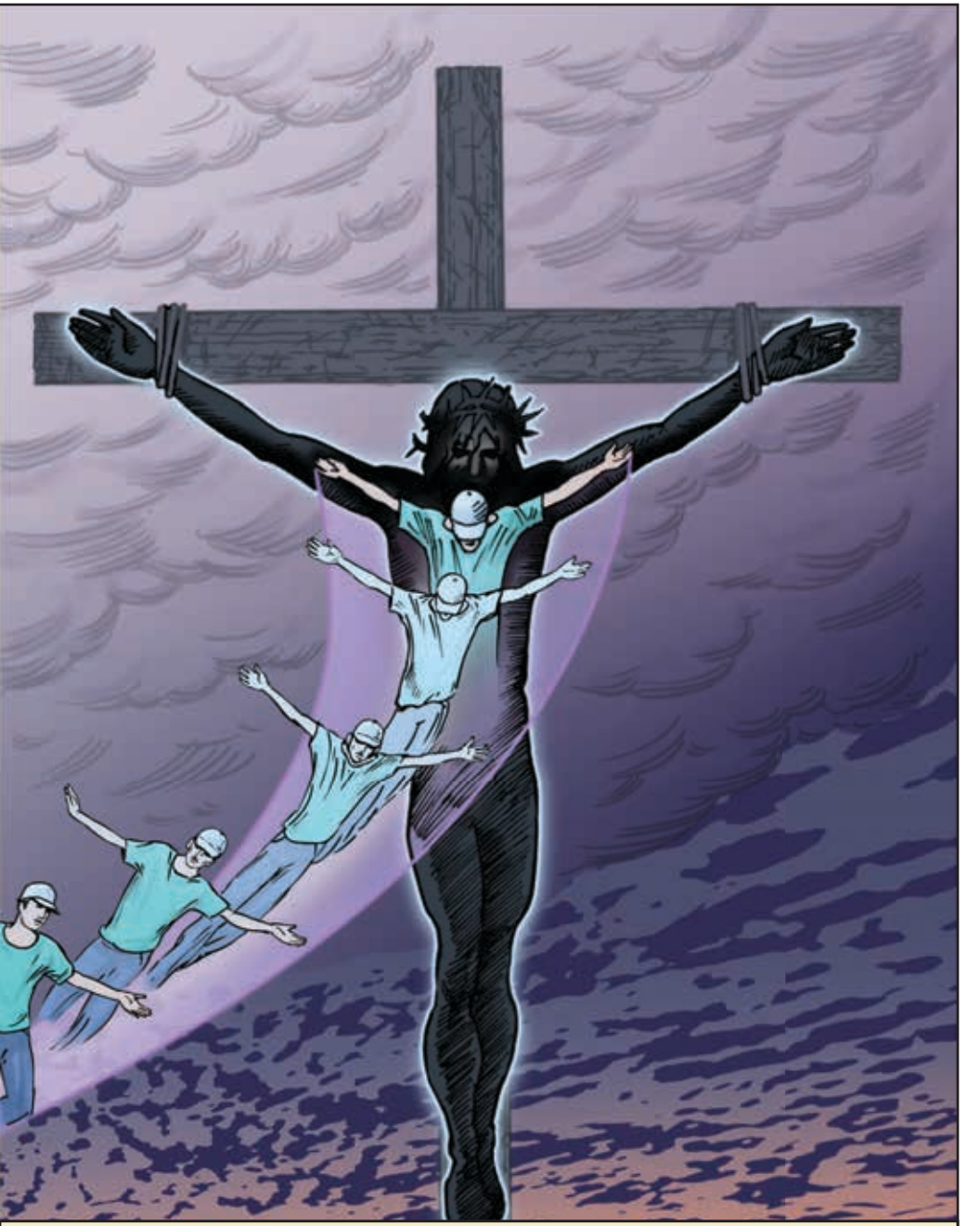

आप उसके साथ एक हो जाते हो। आप मसीह के साथ एक हो गए हो और यह कभी नहीं बदलेगा। यीशु आपमें निवास करता है; और आप उसमें। जहां-जहां वह जाता, आप उसके साथ-साथ जाते हो। जहां-जहां आप जाते हो;वह भी आपके साथ-साथ, वहां जाता है।

युहन्ना 14:20, रोमियों 6:6, गलातियों 2:20, गलातियों 4:4-7, गलातियों 5:24, इफिसियो 1:11, कुलुसियो 2:10

जब तुम्हारा " पुराना मनुष्यत्व" यीशु के साथ क्रूस पर मर गया, तो तुम उसी के साथ दफनाए भी गए। तुम्हारा नया आत्मिक मनुष्यत्व यीशु के साथ जीवन में आता है; और तुम उसके साथ स्वर्गीय स्थानों पर उठा लिए जाते हो। तुम कमियों, गलानि, शर्म और पाप के थैले को पीछे छोड़ जाते हो। तुम अब मसीह में हो; और वह तुममें है। तुम पुराना जीवन दे देते हो और नया जीवन पा जाते हो। तुम्हारे अन्दर अब परमेश्वर का आत्मा है; और तुम्हारी आत्मा परमेश्वर के साथ जीवन में पुन:स्थापित हो जाती है। तुम मसीह में हो और अनंत जीवन की महान यात्रा में अग्रसर हो। **तुम्हारा नए सिरे से जन्म हुआ है।**

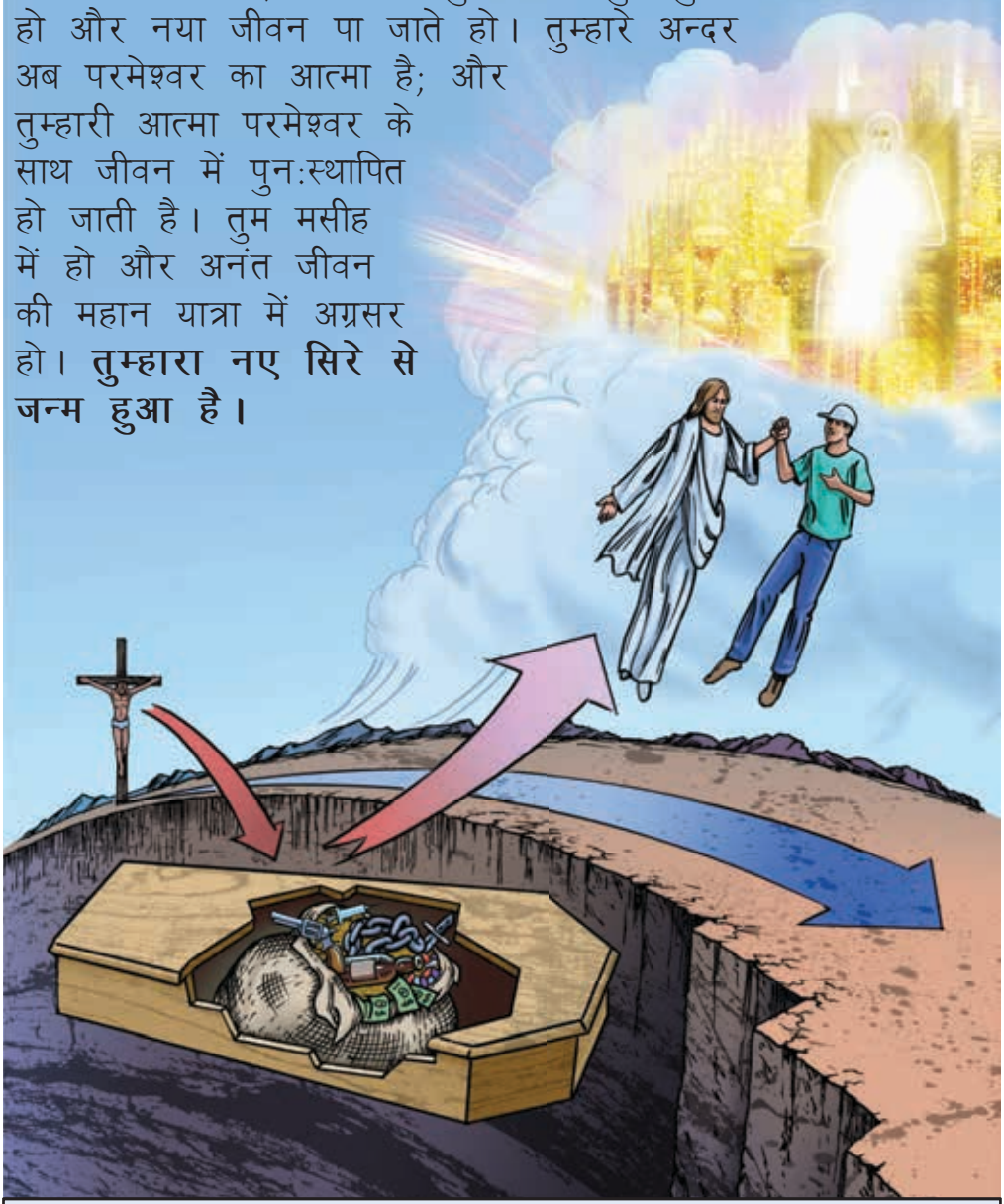

यूहन्ना 3:6, यूहन्ना 11:25-26, रोमियो 5:5, रोमियो 6:4-6, रोमियो 8:10, कुलुसियो 2:12-14, कुलुसियों 3:1-3 इफिसियो 1:13दुसरा भाग इफिसियो 2:6

यदि आप अपनी प्रार्थनाओं में ईमानदार रहे हैं; तो अब आप एक नए परिवार के सदस्य हो गए हो; परमेश्वर के परिवार के सदस्य। परमेश्वर पिता ने हम सब को अपनी सन्तान होने के लिए गोद लिया है; और हम अपने बड़े भाई यीशु के साथ संगी वारिस हैं। उसने तुम्हें विना शर्त अपने परिवार का हिस्सा होने के लिए स्वीकार किया है। **तुम परमेश्वर की संतान हो।**

भजन संहिता 16:11, रोमियों 5:11, रोमियों 8:15-17, 2कुरिन्थियों 5:17, फिलिपियो 3:20 इब्रानियो 2:11-12, प्रकाशितवाक्य 21:2

पापों के साथ तुम्हारा पुराना मनुष्यत्व, मसीह के साथ क्रूस पर मर गया। आप अब शान्ति पा सकते हो; क्योंकि आप अब पाप, वासना और मनुष्यों के स्वार्थी तौर-तरीकों से मुक्त हो। आप मसीह के साथ मर गए; और मृत्यु आपको अब डरा नहीं सकती; क्योंकि शैतान के भय के हथियार को अब निष्क्रिय किया जा चुका है।

इस अनंत नए जीवन के साथ नव उत्साह और निर्भीकता आती है। मृत्यु तुम पर अब प्रभाव नहीं डाल सकती। हमारे चोरी के पाप, ठगी के पाप, झूठ के पाप, और बहुत सारे अन्य गुनाहों के लिए मसीह मर गए। हम भी उसके साथ मारे गए और पाप की सामर्थ्य से स्वतन्त्र किए गए। अब हमारे पास चुनाव है; कि हम परमेश्वर के बताएं तौर-तरीकों से कार्य करें या फिर अपने तरीके से। अपनी समस्त इच्छाओं और इस जीवन को यीशु मसीह के हवाले करने के पहले हमारे पास यह चुनाव नहीं था।

रोमियों 6:11-13, रोमियों 8:1-2, रोमियों 8:15-17, गलातियों 5:16, कुलुसियो 2:6-7, 2तीमुथियस 1:7, इब्रानियों 2:14-15

इस सत्य को पूरी तरह से समझना हमारे लिए मुश्किल है; क्योंकि हमारा शरीर, मन और व्यक्तित्व अभी तक इस संसार में जी रहा है, परन्तु अब परमेश्वर का आत्मा हमारे अन्दर निवास करता है और हम आत्मिक प्राणी हैं। यदि हमें प्रचुरता का जीवन पाना है; जो परमेश्वर चाहता है कि हमारे पास हो, तब हमें इन घटनाओं को विश्वास से स्वीकार करना होगा। अपनी विचारधारा बदल दें और पहचानें कि हम कौन हैं और कहां हैं? अपने परमपिता के साथ ईश्वरीय बातों पर अपना मन लगाएं और इस पृथ्वी के प्रतिदिन के कूड़े-कर्कट जैसी चीजों पर अपना मन न लगाएं। तुम्हें परमेश्वर के परिवार में पवित्र आनंद मिलेगा। तुम्हारा पुराना मनुष्यत्व मर गया और मसीह में तुम्हें नया जीवन मिला है। यह पूरी तरह से सोचने का एक नया तरीका है। **तुम्हारा रूपांतरण हो चुका है।**

रोमियो 8:5-6, रोमियो 12:2, 1कुरिन्थियो 2:16, इफिसियो 2:6, फिलिपियो 2:5, फिलिपियो 3:20, फिलिपियो 4:6-8, कुलुसियो 3:1-3, 2 तीमुथियस 1:7

हमारी विरासत या तो हमारे शारारिक पिता आदम के वंश से है या फिर यह परमेश्वर के परिवार से है। यहां और कोई विकल्प नहीं है। यीशु पर विश्वास न करने से हम आदम वंश में रहते हैं। कुछ

कुछ विश्वासी सोचते हैं कि वे अपना एक पैर आदम के वंश अर्थात संसार के चीजों में रख सकते हैं और दूसरा पैर परमेश्वर के परिवार में। उसका परिणाम आंतरिक संघर्ष और आत्मिक उथल-पुथल होती है। यह हमें स्पष्ट व सही चुनाव करने नहीं देता और हमें निराशा होती तथा परमेश्वर के जयवन्त जीवन को प्राप्त करने में हम असफल हो जाते हैं।

मती 7:13-14, रोमियों 6:16, रोमियों 7:14:25, रोमियों 8:1-2, 1कुरिन्थियों 15:22, गलातियों 5:16, फिलिपियों 3:20

जैसे परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व-अर्थात पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हैं, वैसे ही हमारे भी तीन भाग हैं। हम देह में रहते हैं, जो ज्ञान्द्रियों से आप-पास के वातावरण से संबंध रखता है। हमारे पास एक प्राण है; जो हमारे व्यक्तित्व, मस्तिष्क, इच्छा और भावना को प्रगट करता है। हमारे पास आत्मा हैं, जो यीशु पर भरोसा करने के द्वारा और उसकी मृत्यु, दफनाए जाने और जी उठने में उसके साथ एक होने से, जीवित किया गया है। हमारा आत्मिक भाग हमारा एक हिस्सा है; जो परमेश्वर से संबंध रखता है। उत्पति

उत्पति 2:7, मत्ती 3:13-17, यूहन्ना 3:6, रोमियों 8:10, 1 कुरिन्थियों 3:16-18, 1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24, इब्रानियो 4:12

हमारा कार्य केवल इतना है कि हम अपने को पूर्ण रूप से यीशु मसीह को समर्पित कर दें। उसकी इच्छा है कि वह अपना जीवन हममें और हमारे द्वारा जीए, ताकि अपने उद्देश्य को इस पृथ्वी पर पूरा कर सके। हम

हम सही मायने में मसीह की देह हैं; और उसकी इच्छा है कि वह हमारे द्वारा दूसरों तक पहुंचे और परिवार की बढ़ोत्तरी करे। परमेश्वर के परिवार में आपका स्वागत है। तुम अब एक नए प्राणी हो। पुराने मनुष्यत्व को अलविदा कहो और नए मनुष्यत्व को पहन लो कि यीशु मसीह तुम्हारे द्वारा अपना जीवन जीएं।

रोमियो 6:11-13, रोमियों 8:10, रोमियो 12:1, रोमियो 12:4-5, 1कुरिन्थियो 3:16, 1कुरिन्थियो 6:19-20, 2कुरिन्थियो 5:16-21, इफिसियो 4:21-24, फिलिपियो 2:5-8, कुलुसियो 1:27, 1 यूहन्ना 3:1-3, 1 यूहन्ना 3: 9-10, 1 यूहन्ना 5:18-19

परमेश्वर के सन्तान और यीशु के साथ सह-उत्तराधिकारी होने के नाते हम उसके साथ विरासत में साझेदारी की शुरूआत करते हैं; और प्रचुरता के जीवन को पाते हैं। उसकी नई आत्मा तुममें होने के कारण तुम परमेश्वर के तौर-तरीकों को सीखने की जिज्ञासा रखते हो; कि तुम उसके पीछे चल सको। परमेश्वर अपने आप को अपने पुत्र, यीशु मसीह में पूर्णता से प्रगट करते हैं। इसलिए उसके बारे में जितना भी सीख सकते हैं; सीखें। एक बाईबिल खरीद लें और नए नियम से यीशु के जीवन के बारे में पढ़ें। यूहन्ना के सुसमाचार से पढ़ना एक अच्छी शुरूआत होगी। पुराने नियम में उत्पति की पुस्तक के, पहले बारह अध्याय बताते हैं; कि सब चीजों का आरम्भ कैसे हुआ। इस किताब के पन्नों के तल के संदर्भों की जांच अपनी बाईबल से कर लें या इस किताब के सदर्भों के भाग में बाईबल के वचनों को बेहतर समझ के लिए, कि प्रत्येक पन्ने पर क्या लिखा है।

- परम पिता से हर दिन प्रार्थना में बात करें। नए जीवन और नए परिवार के लिए उसका धन्यवाद करें। उससे खुलकर और एक दोस्त के समान घनिष्ट होकर बात करें जैसे वह आपके बगल में खड़ा है। यीशु मसीह के रूप में उसकी कल्पना करें, जिससे तुम एक बड़े भाई की तरह संबंध रखते हो।

- बाईबिल पढ़ें। अब तुम्हारे पास नई आत्मा है, उसके साथ-साथ परमेश्वर का आत्मा भी तुममें है। बाईबिल समझने के लिए तुम्हें नई समझ आएगी। बाईबिल के वचन परमेश्वर के वचन हैं; यह तुम्हारे परम पिता का बोलने का तरीका है। तुम्हारी कल्पना से कहीं अधिक प्रेम वह तुमसे करता है।

- किसी चर्च या सभा और/अथवा बाईबिल अध्ययन की सभा की तलाश करें, जहां पर तुम दूसरों से मिल सको और तुम्हारे विश्वास मे वृद्धि हो। परम पिता तुमसे, दुसरे विश्वासियों के माध्यम भी बात कर सकते हैं।

- जब तुम अपना जीवन यीशु को समर्पित करते हो, तो उसके बाद पानी का बपतिस्मा होना आवश्यक है। यह उसके साथ गहराई, आज्ञापालन और उसके साथ पहचान की क्रिया को दर्शाता है।

- मसीही में विश्वास हेतु अपने लिए प्रायोजक खोजें, जो तुम्हें शिक्षा व संरक्षण दे, जिससे तुम सीख सको और जिसके प्रति तुम जबाबदेह बन सको।

- जाओ और दूसरों को अपने नए विश्वास और यीशु के बारे में बताओ।

- हमारी सलाह है कि एक बाईबिल-जैसे हिंदी बाइबिल; सहज-पठनीय-रूपांतरण, खरीदें। प्रभु, तुम्हारी आत्मिक यात्रा में आशीष दे।

यहोशु 1:8, मती 3:13-17, मती 7:7-8, मती 10:32, युहन्ना 14:13-14, युहन्ना 15:7, फिलिपियो 4:6-7, इब्रानियों 4:12, याकूब 5:15-16, 1युहन्ना 1:9

संसार के व्यवहार और रीति-रिवाज की नकल न करें। ऐसा होने दें, कि परमेश्वर तुम्हारे सोचने के तरीके में बदलाव के द्वारा तुम्हें एक नया व्यक्तित्व प्रदान करें। तब जान पाओगे कि तुम्हारे लिए परमेश्वर की इच्छा भली, सुखद, मनोरम है।

रोमियो 12:2

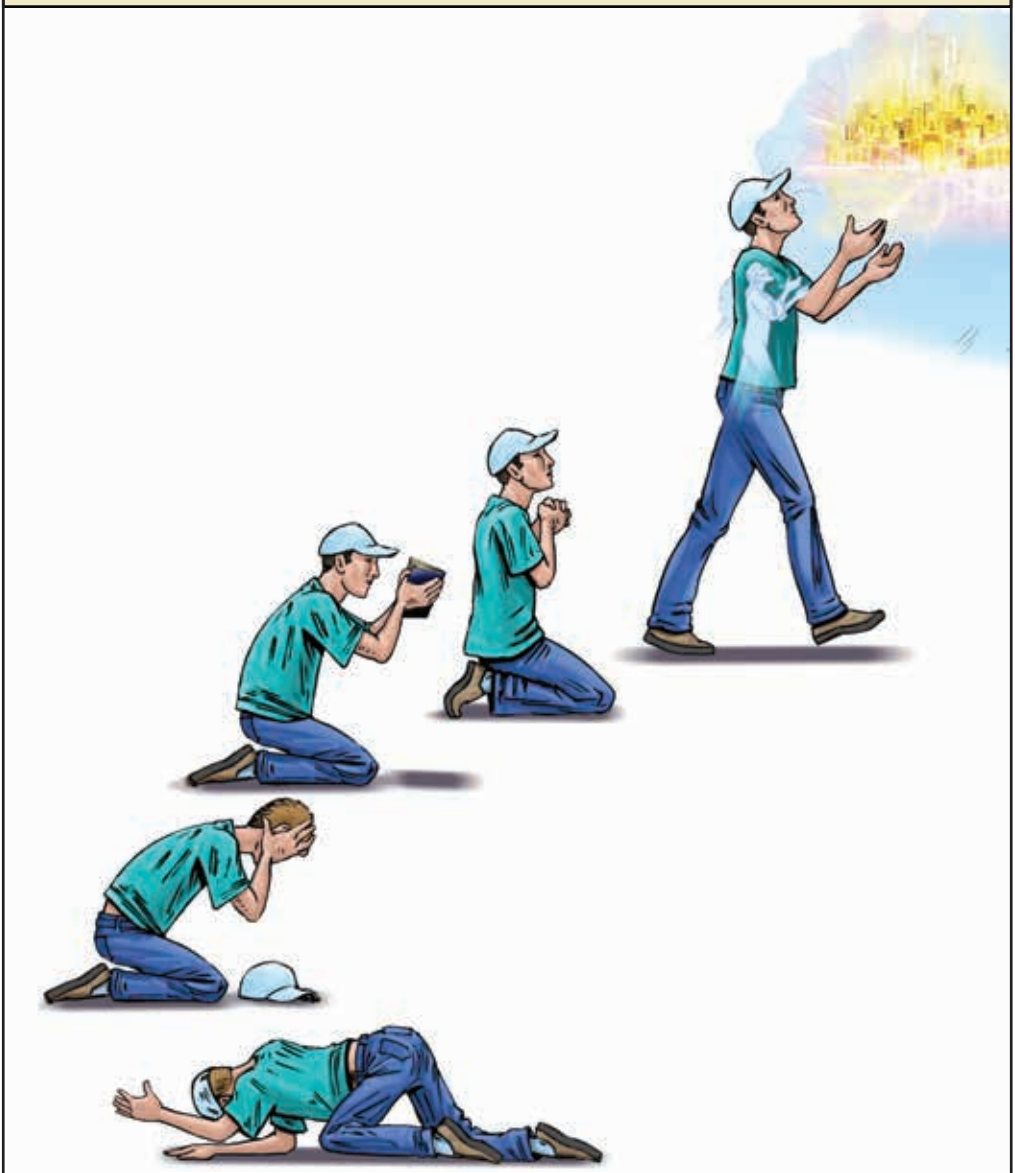

जैसे मैं जीवित हूँ, वैसे तुम भी जीवित रहोगे। जब मैं जिलाया जाउंगा, तुम जानोगे कि मैं पिता में हूँ, और तुम मुझमें और मैं तुममें।

युहन्ना 14:19-20

हम उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए, दफनाए गए और उसके साथ जी भी उठे और अब हम उसके साथ स्वर्गीय स्थानों में परमेश्वर की उपस्थिति में बैठे हैं।

उसने हमें मसीह के साथ जिलाया और स्वर्गीय स्थलों में अपने साथ बिठाया क्योंकि हम यीशु के साथ एक किए गए हैं।
इफिसियो 2:6

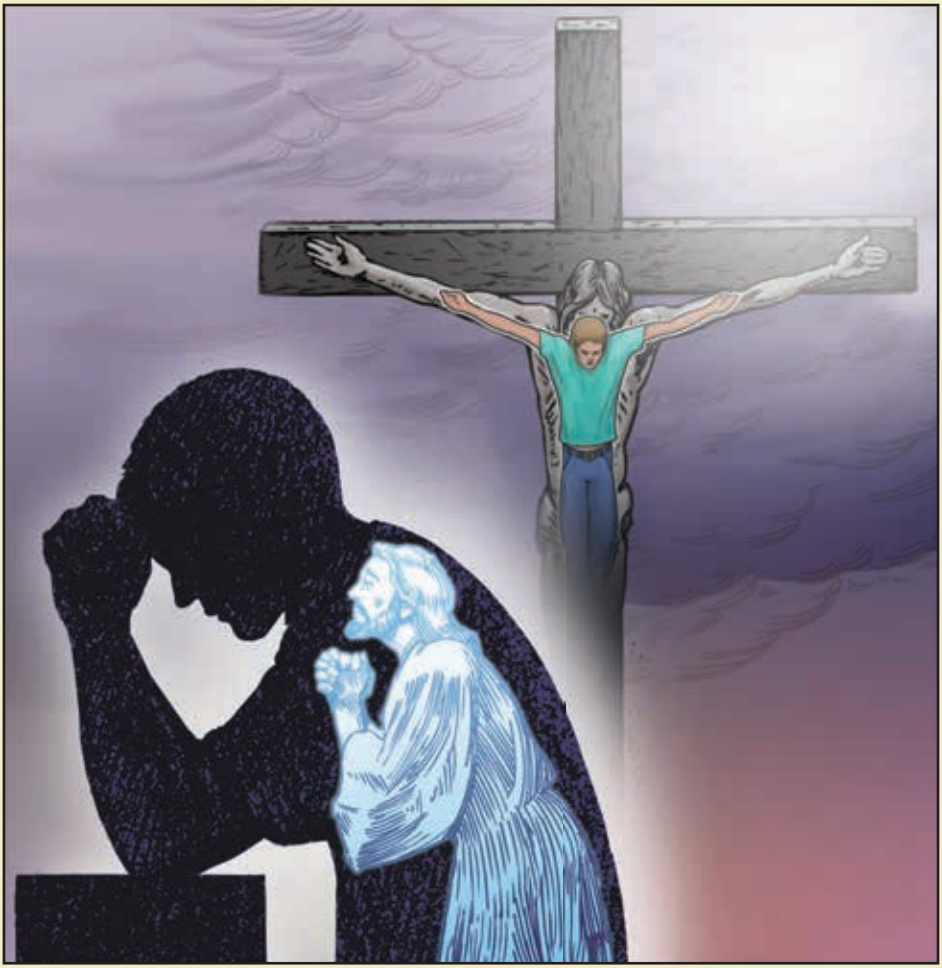

मेरा पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया। अब मैं जीवित नहीं, परन्तु मसीह मुझमें जीवित है। मैं इस देह में परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करके जीवित रहता हूँ; जो मुझसे प्रेम करता है, और उसने अपने आप को मेरे लिए दे दिया। गलतियों 2:20

अब तुम परमेश्वर की सन्तान हो.....

परमेश्वर के नवजात बच्चे होने के कारण तुम्हारा सौभाग्य है कि तुम उसके बेटे और बेटियां हो। तुम उसके साथ सहभागिता में आ सकते हो, उसे अपना पिता पुकारो, उसकी गोद में बैठो, उसके सामने अपना हृदय खोलो और समान्य रूप से उसे अपना प्रेमी, पिता, साथी, दोस्त, दाता और अपना विश्वासयोग्य साथी बनाओ। तुम्हारे सौभाग्य के साथ-साथ तुम्हारी कुछ जिम्मेदारियां भी हैं, जिनकी व्याख्या अगले कुछ पन्नों में की जाएगी। तुम्हें सलाह दी जाती है; कि जब तुम मसीह को ग्रहण करते हो, तो जल्द ही किसी न किसी को इसके बारे में बताओ। इस पृथ्वी पर **जो मुझे सबके सामने मान लेगा, स्वर्ग में अपने परम पिता के सामने मैं भी उसे स्वीकार कर लूंगा। मत्ती 10:32** समस्या यह है कि हमें अच्छी तरह यह सिखाया नहीं गया है कि यह कैसे करें; परन्तु प्रक्रिया बहुत ही साधारण है। अगले पन्नों में इसकी व्याख्या की गई है कि कैसे अपनी गवाही, दूसरों को बताएं। इसकी कुंजी आपकी स्वेच्छा है; और यह अवधारणा साधारण और आसान है। यदि तुम्हारी प्रार्थना में सत्यनिष्ठा है; तो यीशु से मांगे कि वह तुम्हारी इच्छा और जीवन पर अधिकार कर ले। वह इसी क्षण वह तुम्हारे अन्दर है; और तुम्हारे सोचने, महसूस करने और निर्णय लेने के तौर-तरीकों को वह बदल रहा है। प्रक्रिया बहुत ही आसान है; ***जैसे कि पहले मैं नहीं देखता था अब मैं देखता हूँ; यूहन्ना 9:25।***

जब तुम अपनी गवाही दुसरों के साथ बांटते हो तो तुम आज्ञाकारी हो और वही कर रहे हो जो परमेश्वर तुम्हे करने के लिए बोलता है। तुम नए जीवन की तैयारी कर रहे हो। याद रहे, यह तुम नहीं परन्तु मसीह तुममें है; इसलिए तैयार रहें और उसे बोलने बबबबदें।

इसे दूसरों तक पहुंचाएं।

हमें आज्ञा मिली है कि हम यीशु के बारे में जानने में दूसरों को मदद करें और परमेश्वर के राज्य का विस्तार करें। **क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुए को ढूंढ़ने आया है। लूका 19:10।** तुम मसीह की देह हो, और अगले कुछ पन्नों में इन निर्देशों को जारी रखेंगे। कुन्जी यह है कि आप बने रहें व उपलब्ध रहें। तुम अपने आप को उपलब्ध बनाए रखो कि यीशु तुममें अपना जीवन जी सकें और दूसरों तक पहुंच सकें। शायद वह आप से यह नहीं कह रहा है कि जाकर किसी अजनबी को बताओ परन्तु उन्हें जिन्हें आप जानते हों, उनका ख्याल रखो और उनसे दिन-प्रतिदिन मेल मिलाप रखो। उसने उन्हें पहले ही अलग कर रखा है। जब तुम किसी के बारे में सोचते हो कि शायद वह यीशु को जानने की जिज्ञासा रखता है, तो तुम यीशु की तरह सोचने की शुरूआत कर रहे हो। आत्मा को जीतने वाले कैसे बनें, यह इस भाग में आप सीखेंगे कि यीशु को जानने में और परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करने में कैसे दूसरों की अगुवाई करें। इसके लिए निर्देश मुश्किल नहीं है, किन्तु तुम्हारी ओर से

से इतना हो कि तुम इच्छुक हों और तुम्हें इस बात की आकांक्षा हो कि यीशु तुममें होकर अपना जीवन जीएं। अब मैं सबसे पहले आग्रह करता हूं कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए किए जाएं।

1 तीमुथियुस 2:1

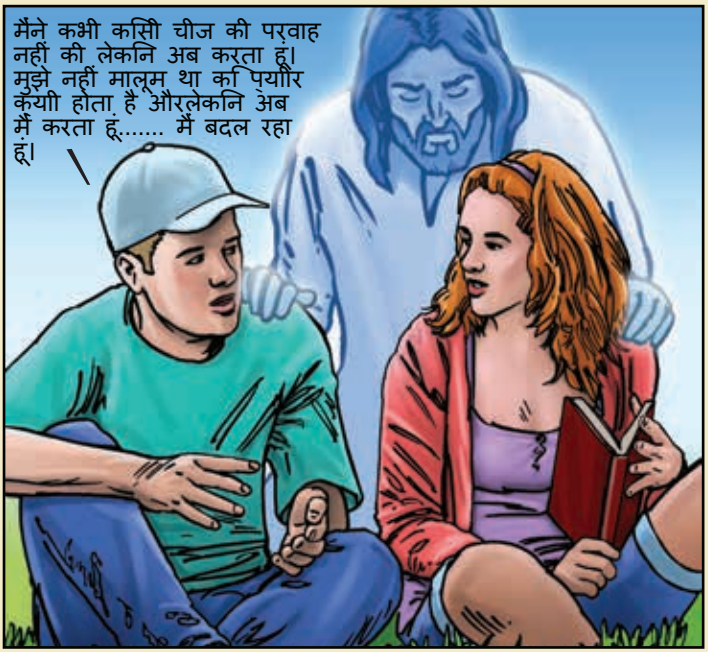

मैं अंधा था और अब देखता हूँ! यूहन्ना 9:25

अपने मसीही बननें की कहानी

व्यक्तिगत गवाही के द्वारा कैसे बताएं।

यीशु मसीह को जानना और उस पर भरोसा रखने की व्यक्तिगत गवाही को बांटना, व्यक्तिगत सुसमाचार का पहला कदम है। व्यक्तिगत गवाही दो प्रकार की है। पहली है; ऐतिहासिक, अर्थात मसीह के पास आने से पहले, कि आप कैसे उसके पास आए, उसके बाद यीशु को आपने प्रभु और परमेश्वर और अपने आत्मा का उद्धारक स्वीकार किया और दूसरी विषय पर आधारित गवाही, अर्थात आपके उद्धार के समय का क्षण और उसके बाद आपके जीवन में बदलाव। यह उसके लिए हो सकता है; जो मसीह के पास एक बच्चे की तरह आता है और बदलाव के बाद के जीवन की व्याख्या करना चाहता है। दूसरा उदाहरण यह हो सकता है कि जिस व्यक्ति ने विश्वास किया वह मसीही घराने में पैदा हुआ है और उसे पता लगता है कि वह परमेश्वर को नहीं जानता और जीवन की ऐसी घड़ी में आ पहुंचा है जहां पर वह पश्चाताप करके अपने को समर्पित कर दे। **अपने और गवाही सुननेवाले के बीच कुछ समानता के आधार पर गवाही देना आरंभ करें जैसे -एक ही शहर, एक ही नौकरी और एक ही स्कूल इत्यादि। कुछ परस्पर हितों की बातों को खोजें।**

यह कैसा था?

जब तुम अपनी कहानी दुसरों से बांटते हो, तुम व्यौरा देते और संक्षेप में उसे यात्रा के बारे में बताते हो, जिसने तुम्हारे सोचने के तरीके और जीवन के प्रबंधन को बदल डाला। हम में से प्रत्येक ने अपने जीवन बुरे निणर्य और गलत चुनावों किए होंगे। जो हम अब कामना करते है; कि न किए होते और न ही दुबारा करना चाहते हैं। यदि हमें अवसर और मौका मिले कि हम उन क्षणों को दुबारा जिएं। कई बार यह घटनाओं का क्रम, हमें पीछे धकेलता है या फिर यह प्रमुख गलती हो सकती है; या अनापेक्षित घटना, जो हमें अपने जीवन के बारे में दुबारा से सोचने के जिए मजबूर करें। हमारे व्यवहार व क्रिया कलापों से कोई भी परिणाम व परिस्थिति हो परन्तु उत्प्रेरक हमारे स्वार्थ को समाप्त करने के लिए आता है। यह तब होता है जब आप जानते हैं कि पहले की तरह व्यवहार नहीं कर सकते; चाहे कितना भी बलिदान क्यों न करना पड़े; बदलाव होना अनिवार्य है। शायद तुम उस स्थान में पहुंच चुके हो; जहां पर तुम परिणामों का भुगतान कर रहे हो। हममें से प्रत्येक, जीवन की यात्रा के ऐसे क्षण में पहुंचते हैं; जहां हमें लगता है कि हम केवल अपने आप पर निर्भर नहीं रह सकते। स्वार्थीपन कार्यों को पूर्ण नहीं कर पा रहा है। हमें खोज करनी है कि सच्चा परमेश्वर कौन है? हमें, भूमिका को निभाना छोड़ना पड़ेगा।

क्या हुआ

जब हम अपने आप को दीन व नम्र करते हैं, और जानते हैं कि हम ब्रम्हाण्ड के स्वामी नहीं हैं; हम हमारे विकल्पों को देखना शुरू करते हैं। अजीब और चमत्कारी तरीके से एक घोषणा करने वाला प्रगट होता है; जो हमें उतम जीवन और बहुतायत के जीवन, और परमेश्वर की शान्ति के बारे में बताता है। वह आपका मित्र, भाई, बहन, रिश्तेदार या एक बच्चा आदि।

वह आपसे शायद चर्च जाने या बाईबिल की पढ़ाई के विषय में पूछे। वह शायद तुम्हें अपने जीवन की व्यक्तिगत गवाही से प्रोत्साहित करे; और तुम्हें सलाह दे कि अपनी समस्याओं के निवारण के लिए आप कैसा आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाएं, जैसे कि पहले यीशु की खोज करें, और पहले की तरह, पूरा करने की अपनी शक्ति की कमी को स्वीकार करें। जब तुम परमेश्वर की खोज करते हो, किसी का ध्यान खींच जाता है; और अंत में नए जीवन के तरीके को स्वीकार करके तुम समर्पण करते हो। तुम परमेश्वर

की सन्तान होना, सभी रूपों में जो भी प्राप्त किया जा सके, स्वीकार करते हो। यह तुम्हारे लिए होता है। तुम यीशु मसीह पर भरोसा करते हो और उससे कहते हो कि वह तुम्हारी इच्छा और जीवन पर अधिकार कर ले। नए जीवन की शुरूआत हो गई है।

अब यह कैसा हS

तुम परमेश्वर की संतान और एक नया जन्म पाए हुए विश्वासी बन गए हो, तुम प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करने और उस पर अपने प्रभु, उद्धारक, परमेश्वर और जीवन के रूप में भरोसा करने आए हो। तुम्हारा जीवन बदल गया है, तुम नए दृष्टिकोण के साथ और नए जीवन मूल्यों में प्रवेश करते हो। अब तुम अपने परम पिता के प्रति जवाबदेह हो। इस भाग में आप पीछे मुडकर देखोगे कि तुम्हारे जीवन के तरीके बदल गए हैं, आपका सोच-विचार, यहां तक कि आपका व्यक्तित्व भी बदल चुका है। बताएं कि कैसे परमेश्वर का अनुग्रह मुश्किलों से निपटने के लिए बल देता है। परमेश्वर का आत्मा कैसे सही चीज करने के लिए संकेत करती है; और जब मैं गलत राह पर जाने की कोशिश करता हूँ; तो वह कैसे सुधारता है। इस भाग में तुम अच्छे और बुरे के बारे में बता सकते हो। हम जानते हैं कि हमेशा चीजें सही नहीं होती। महत्वपूर्ण यह है कि मसीह तुम्हारे अन्दर हैं और वह कार्य कर रहा है; और तुम ही वह कार्य हो जो प्रगति में है।

अगला कदम क्या है।

यहां से अब हम मसीह में बढ़ना शुरू करते हैं। कभी-कभी रास्ता उबड़-खाबड़ है और गड्ढ़े से भरा है परन्तु रूकावटों और मुश्किलों का सामना करने के लिए हमारे पास नए साधन हैं। हमारे पास व हमारे अन्दर पवित्र आत्मा के द्धारा परमेश्वर की सामर्थ है, जो हमें रास्ता दिखाती है और पुराने मनुष्यत्व के द्धारा हमें गलत चुनाव करने से रोकती है। हम बाईबल का अध्ययन करते हैं और मसीह के साथ नजदीकी में आकर उसके तौर तरीके सीखते हैं। हम अहसास करते और समझते हैं कि जब मसीह मरा, हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ मर गया और अब हम नई सृष्टि हैं। हमें केवल जानना और समझना है; कि यीशु मसीह हमारे अन्दर रहता है। उपयुक्त, बुनियादी सत्य यह है कि हम बचाए गए हैं; और उसकी समानता में बदल गए हैं। जब हम मसीही परिपक्वता में बढ़ते हैं हम जी उठे उद्धारकर्ता की बराबरी में होते हैं। हम यह एहसास करना शुरू करते हैं कि यीशु मसीह, जिवित परमेश्वर तुममें अपना जीवन जीना चाहता है और तुम्हारे द्धारा, उनके लिए जो उसके है, और परमेश्वर की सन्तान है; अपनी इच्छा पूरी करना चाहता है।

तुम मसीह की तरह बनते जाते हो, पुरानी बातें पीछे छोड़कर, मसीह का अनुसरण करते हो।

भजन संहिता 40:3, युहन्ना 9:25, युहन्ना 12:17, कुलुसियो 4:5-6, 1थिस्सलुनीकियों1:6-8, 1पतरस 3:15, प्रकाशितवाक्य 12:11, प्रकाशितवाक्य 19:10

आत्मओं को जीतने वाले कैसे बने?

एक अविश्वासी को यीशु मसीह का परिचय कराने के लिए निर्देश।

निम्नलिखित दस सुझाव, कुस का संदेश देने के लिए बहुत ही प्रभावशाली साधन हैं। दिशा-निर्देशों का सावधानी पूर्वक अनुसरण करें और तुम अवश्य ही सफलता पाओगे। तुम एक प्रभावी बोने वाले और आत्माओं को जीतने वाले बनोगे। किसी भी हालात में तुम्हें परमेश्वर के राज्य की बढ़ौतरी के कार्य में लगना है; यह तुम्हारे अस्तित्व का प्रथम उदेश्य है।

• **दस लोगों के बारे मे सोचे**:- ये दोस्त भी हो सकते हैं, रिश्तेदार, कोई प्रियजन, ऐसे लोग जिनके साथ आप व्यवसाय करते हैं, या ऐसे लोग जिनके साथ आप प्रतिदिन उठते-बैठते हैं, जैसे कि जिनके साथ दुकान जाते, खेलते और काम करते हैं।

• **उनके नाम लिख ले**:- जब आप दस विशेष लोगों के नाम लिख लें, लिखे हुए पन्ने को ऐसी जगह लटका दें कि तुम हर दिन इन लोगों को याद कर सको।

• **प्रत्येक व्यक्ति के उद्धार के लिए प्रार्थना करना शुरू करें**:- जब आप प्रार्थना करें, परमेश्वर से मांगे कि वे यीशु और अन्नत जीवन के बारे में सुनने के लिए अपना मन और हृदय खोलें। याद रहे हम बुरे लोगों को अच्छे लोग नहीं बना रहे हैं; परन्तु आत्मिक रूप से मरे हुए लोगों को अन्नत जीवन प्रस्तुत करके जिलाते हैं। जो जीवन तुमने पाया है।

• **21 दिन तक लगातार उनके लिए प्रार्थना करें**:- परमेश्वर को कोई फर्क नहीं पड़ता कि इन आत्माओं को प्रार्थना करने के लिए तुम कितना समय बिताते हो; परन्तु हम जानते हैं कि आदत बनाने के लिए कम से कम 21 दिन लगते हैं। इसलिए सुनिश्चित करें कि आप ने कम से कम 21 दिन तक प्रार्थना की हो। फिर तुम खोए हुए लोगों के लिए, सामर्थी प्रार्थना की आदत स्थापित कर लोगे।

• **प्रत्येक से मिलना शुरू करें**:& 21 दिन के बाद , जब आपने अपने सब विषयों प्रार्थना कर ली तो अब कदम उठाने का समय है। पहले व्यक्ति को फोन करें और उसे बताएं कि आप उसे कुछ बताना चाहते हैं, और देखना है कि यह तर्क संगत है या नहीं। अपने मित्र को कॉफी पीने या भोजन करने के लिए बुलाएं। उनसे लगातार सम्पर्क करते रहें जब तक कि वे हां न कर दें।

• **उन्हें किताब दिखाएं, कि परमेश्वर के सन्तान कैसे बने**:- अपने दोस्तों को बताएं कि मेरे पास यह छोटी पुस्तिका है; और इस किताब ने तुम्हारे जीवन को प्रभावित किया है और मैं देखना चाहता हूं कि तुम्हारे लिए यह काम की है या नहीं और यदि तुम्हारे कम्पयूटर, मोबाइल व आई-पैड है; तो howtobeachildofgod.com में जाएं और वहां से इसके बारे में पढ़ें या फिर प्रस्तुति को देखें, यदि आपके पास इस किताब की प्रति नहीं है।

• **पूरी किताब के प्रत्येक पृष्ठ को पढ़ें**:- पृष्ठ 14 की प्रार्थना को पढ़ें, आगे पूरी किताब को पढ़ें। किताब के पीछे लिखे बाईबिल वचनों को अपने मित्र को दिखाएं कि यदि बाईबिल उपलब्ध नहीं है, तो बताएं कि ये संदर्भ को आसानी से समझने के लिए हैं। यह प्रदर्शित करें कि विषय-वस्तु अथवा चित्र को वचन कैसे सिद्ध करते हैं।

मसीह जो तुम में रहता है
कुलुससियों 1:27

• **अपनी कहानी उन्हें बताएं:-** इस क्षण गवाही के द्वारा उन्हें अपनी कहानी बताएं कि कैसे तुमने यीशु मसीह के बारे में जाना। एक गवाही में यह होता है कि पहले जीवन कैसा था, उसके बाद क्या हुआ और अब कैसा है। यदि आपकी ऐसी गवाही का क्रम नहीं जो दूसरे के जीवन की परिस्थियों से मेल खाए; तो तुम्हें इस किताब को गुप्त तरीके से पढ़ना चाहिए, और पृष्ठ 14 पर लिखी हुई प्रार्थना ऊंची आवाज में करनी चाहिए और जो तुमने हृदय में कहा है, उस पर विश्वास करना चाहिए।

• **एक प्रमुख प्रश्न पूछें:-** अपन मित्र से पूछें कि यदि, व क्या जो आपने उससे कहा है, उसके लिए, इसका कुछ मतलब है या नहीं। आप उससे पूछ सकते हैं कि, वह क्या सोचता है कि मरने पर वह स्वर्ग जाएगा या नहीं। उससे अन्नत जीवन का मतलब पूछें। उससे, एक आत्मिक और मसीह केन्द्रित वार्तालाप करें। परमेश्वर आपको बोलने के लिए शब्द देगा आपको, केवल इच्छा रखनी और खुले रहना है।

• **अपने मित्र को यीशु मसीह को जानने में अगुवाई करें:-** यदि आपका मित्र सकारात्मक प्रति-उत्तर दे, अर्थात 'जो आपके पास है; मुझे भी चाहिए', 'मसीही कैसे बनना है? मैं और अधिक जानना चाहता हूँ। पृष्ठ 14 में लिखी प्रार्थना 'परमेश्वर की संतान कैसे बने? को ऊंची आवाज में बोले या तुम्हारे पीछे बोलने के द्वारा, उसे मसीह में आने में उसका मार्गदर्शन करें। प्रार्थना के बाद, पृष्ट 15-20 में बने संदर्भ और चित्रों पर वापस जाकर यह सुनिश्चित करें कि क्रूस का संदेश उसे सही तरह से समझ आ गया है। यदि आपने परमेश्वर की महिमा के विषय में उसे पूरी तरह से समझाया है, फिर एक और नाम लिखा जाएगा, और वह तुम्हारा मित्र और परमेश्वर की संतान होगा।

परिश्रम की कटनी

यदि आप इन साधारण निर्देशों का पालन करें, तो इसमें दो राय नहीं, और न कोई नियम है कि आप आत्माओं को जीतने वाले बनेंगे। परमेश्वर ने आपको एक अलग व्यक्तित्व दिया है; और कुछ लोगों के बीच में आपका ऐसा दायरा बनाया है जिन्हें आप पहले से जानते हैं। आपको केवल इतना करना है कि प्रार्थना करें और उनके पास जाएं, बाकी कार्य परमेश्वर करेगा। मौके हैं, और जिन व्यक्तियों की सूची आपने बनाई है, ये वही हैं, जिन्हें उसने भी चुना है। केवल ऐसा व्यक्ति चाहिए जो उनके लिए घोषणा करे, और वह व्यक्ति आप हैं। जब आप अपने दोस्त से बात करते हैं, परमेश्वर आपके द्वारा बात करेगा। **केवल विश्वास करें कि पूरी प्रक्रिया को पहले से ही तैयार किया गया है, परमेश्वर केवल आपके पहुंचने का इन्तजार कर रहा था। परमेश्वर केवल इतना चाहता है कि हम अपने आप को उपलब्ध रखें।** यह भी हो सकता है कि किसी व्यक्ति का मसीह में आने का यह समय न हो।

उस दिन यह हो सकता है कि आप आत्मा के जीतने वाले नहीं पर वचन की बीज बोने वाले या सींचने वाले हो सकते है। किसी भी सुरत में, आपको अपने स्वर्गीय पिता की ओर आज्ञाकारी बने रहना है, और यह वह यही चाहता है। यदि आप परमेश्वर की सन्तान हैं, फिर यह आप नहीं, परन्तु मसीह आप में, जो सब कार्य की देखभाल करता है।

मती 4:19-20, मती 10:32, लूका 9:60, लूका 10:2, लूका 19:10, युहन्ना 15:16, प्रेरितों के काम 1:8, प्रेरितों के काम 9:28, 1तीमुथियस 2:3-4

बाइबिल केछंदोंका वर्णक्रम अनुसार पूरा पाठ

इफिसियों 1:5-8 „संसार की रचना से पहले ही परमेश्वर ने हमें, जो मसीह में स्थित हैं, अपने सामने पवित्र और निर्दोष बनने के लिये चुना। हमारे प्रति उसका जो प्रेम है उसी के कारण उसने यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने बेटों के रूप में स्वीकार किये जाने के लिए नियुक्त किया। यही उसकी इच्छा थी और यही प्रयोजन भी था। उसने ऐसा इसलिए किया कि वह अपनी महिमाय अनुग्रह के कारण स्वयं को प्रशंसित करे। उसने इसे हमें, जो उसके प्रिय पुत्र में स्थित हैं मुक्त भाव से प्रदान किया। उसकी बलिदानी मृत्यु के द्वारा अब हम अपने पापों से छुटकारे का आनन्द ले रहे हैं। उसके सम्पन्न अनुग्रह के कारण हमें हमारे पापों की क्षमा मिलती है। अपने उसी प्रेम के अनुसार जिसे वह मसीह के द्वारा हम पर प्रकट करना चाहता था। उसने हमें अपनी इच्छा के रहस्य को बताया है।“ पेज 15,16

इफिसियों 1:7 „उसकी बलिदानी मृत्यु के द्वारा अब हम अपने पापों से छुटकारे का आनन्द ले रहे हैं। उसके सम्पन्न अनुग्रह के कारण हमें हमारे पापों की क्षमा मिलती है। अपने उसी प्रेम के अनुसार जिसे वह मसीह के द्वारा हम पर प्रकट करना चाहता था।“ पेज 4

इफिसियों 1:11 „सब बातें योजना और परमेश्वर के निर्णय के अनुसार की जाती है। और परमेश्वर ने अपने निजी प्रयोजन के कारण ही हमें उसी मसीह में संत बनने के लिये चुना है। यह उसके अनुसार ही हुआ जिसे परमेश्वर ने अनादिकाल से सुनिश्चित कर रखा था।“ पेज 18

इफिसियों 1:13-14 „जब तुमने उस सत्य का संदेश सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार था, और जिस मसीह पर तुमने विश्वास किया था, तो जिस पवित्र आत्मा का वचन दिया था, मसीह के माध्यम से उसकी छाप परमेश्वर के द्वारा तुम लोगों पर भी लगायी गयी। वह आत्मा हमारे उत्तराधिकार के भाग की जमानत के रूप में उस समय तक के लिये हमें दिया गया है, जब तक कि वह हमें, जो उसके अपने है, पूरी तरह छुटकारा नहीं दे देता। इसके कारण लोग उसकी महिमा की प्रशंसा करेंगे।“ पेज 17.19

इफिसियों 2:6 „और क्योंकि हम यीशु मसीह में हैं इसलिए परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ ही फिर से जी उठाया और उसके साथ ही स्वर्ग के सिंहासन पर बैठाया।“ पेज 19

इफिसियों 2:8-10 „परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा अपने विश्वास के कारण तुम्हारा उद्धार हुआ है। यह तुम्हें तुम्हारी ओर से प्राप्त नहीं हुआ है, बल्कि यह तो परमेश्वर का वरदान है। यह हमारे किये कर्मों का परिणाम नहीं है कि हम इसका गर्व कर सकें। क्योंकि परमेश्वर हमारा सृजनहार है। उसने मसीह यीशु में हमारी सृष्टि इसलिए की है कि हम नेक काम करें जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही इसलिए तैयार किया हुआ है कि हम उन्हीं को करते हुए अपना जीवन बितायें।“ पेज 8,15,16

इफिसियों 2:13 „किन्तु अब तुम्हें, जो कभी परमेश्वर से बहुत दूर थे, मसीह के बलिदान के द्वारा मसीह यीशु में तुम्हारी स्थिति के कारण, परमेश्वर के निकट ले आया गया है।“ पेज 13

इफिसियों 2:14 „यहूदी और ग़ैर यहूदी आपस में एक दूसरे से नफ़रत करते थे और अलग हो गये थे। ठीक ऐसे जैसे उन के बीच कोई दीवार खड़ी हो। किन्तु मसीह ने स्वयं अपनी देह का बलिदान देकर नफ़रत की उस दीवार को गिरा दिया।“ पेज 9

इफिसियों 3:14-15 „इसलिए मैं परमपिता के आगे झुकता हूँ। उसी से स्वर्ग में या धरती पर के सभी वंश अपने अपने नाम ग्रहण करते हैं।“ पेज 17

इफिसियों 4:21-22 „मुझे कोई संदेह नहीं है कि तुमने उसके विषय में सुना है; और वह सत्य जो यीशु में निवास करता है, उसके अनुसार तुम्हें उसके शिष्यों के रूप में शिक्षित भी किया गया है। जहाँ तक तुम्हारे पुराने जीवन प्रकार का संबन्ध है तुम्हें शिक्षा दी गयी थी कि तुम अपने पुराने व्यक्तित्व को उतार फेंको जो उसकी भटकाने वाली इच्छाओं के कारण भ्रष्ट बना हुआ है।“ पेज 25

इब्रानियों 1:3 “ वह पुत्र परमेश्वर की महिमा का तेज-मंडल है तथा उसके स्वरूप का यथावत प्रतिनिधि। वह अपने समर्थ वचन के द्वारा सब वस्तुओं की स्थिति बिनाये रखता है। सबको पापों से मुक्त करने का विधान करके वह स्वर्ग में उस महामहिम के दाहिने हाथ बैठ गया।“ पेज 1,2,5

इब्रानियों 2:11-17 „वे दोनों ही-वह जो मनुष्यों को पवित्र बनाता है तथा वे जो पवित्र बनाए जाते हैं, एक ही परिवार के हैं। इसलिए यीशु उन्हें भाई कहने में लज्जा नहीं करता। उसने कहा: “मैं सभा के बीच अपने बन्धुओं में तेरे नाम का उदघोष करूँगा। सबके सामने मैं तेरे प्रशंसा गीत गाऊँगा।” और फिर, “मैं उसका विश्वास करूँगा।” और फिर वह कहता है: “मैं यहाँ हूँ, और वे संतान जो मेरे साथ हैं। जिनको मुझे परमेश्वर ने दिया है।” क्योंकि संतान माँस और लहू युक्त थी इसलिए वह भी उनकी इस मनुष्यता में सहभागी हो गया ताकि अपनी मृत्यु के द्वारा वह उसे अर्थात् शैतान को नष्ट कर सके जिसके पास मारने की शक्ति है। और उन व्यक्तियों को मुक्त कर ले जिनका समूचा जीवन मृत्यु के प्रति अपने भय के कारण दासता में बीता है। क्योंकि यह निश्चित है कि वह स्वर्गदूतों की नहीं बल्कि इब्राहीम के वंशजों की सहायता करता है। इसलिए उसे हर प्रकार से उसके भाईयों के जैसा बनाया गया ताकि वह परमेश्वर की सेवा में दयालु और विश्वसनीय महायाजक बन सके। और लोगों को उनके पापों की क्षमा दिलाने के लिए बलि दे सके।“ पेज 1,2,20

इब्रानियों 2:14-15 „क्योंकि संतान माँस और लहू युक्त थी इसलिए वह भी उनकी इस मनुष्यता में सहभागी हो गया ताकि अपनी मृत्यु के द्वारा वह उसे अर्थात् शैतान को नष्ट कर सके जिसके पास मारने की शक्ति है। 15 और उन व्यक्तियों को मुक्त कर ले जिनका समूचा जीवन मृत्यु के प्रति अपने भय के कारण दासता में बीता है।“ पेज 4

इब्रानियों 4:3 „अब देखो, हमने, जो विश्वासी हैं, उस विश्राम में प्रवेश पाया है। जैसा कि परमेश्वर ने कहा भी है: “मैंने क्रोध में इसी से तब शपथ लेकर कहा था, ‘वे कभी मेरी विश्राम में सम्मिलित नहीं होंगे।’” जब संसार की सृष्टि करने के बाद उसका काम पूरा हो गया था।“ पेज 13

इब्रानियों 4:7 „इसलिए परमेश्वर ने फिर एक विशेष दिन निश्चित किया और उसे नाम दिया "आज" कुछ वर्षों के बाद दाऊद के द्वारा परमेश्वर ने उस दिन के बारे में शास्त्र में बताया था। जिसका उल्लेख हमने अभी किया है:"यदि आज उसकी आवाज़ सुनो,अपने हृदय जड़ मत करो।" " पेज 13

इब्रानियों 4:12 „परमेश्वर का वचन तो सजीव और क्रियाशील है, वह किसी दोधारी तलवार से भी अधिक पैना है। वह आत्मा और प्राण, सन्धियों और मज्जा तक में गहरा बेध जाता है। वह मन की वृत्तियों और विचारों को परख लेता है। " पेज 24,26

इब्रानियों 9:22 „वास्तव में व्यवस्था चाहती है कि प्रायः हर वस्तु को लहू से शुद्ध किया जाए। और बिना लहू बहाये क्षमा है ही नहीं।" पेज 4

उत्पत्ति 2:7 „तब यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी से धूल उठाई और मनुष्य को बनाया। यहोवा ने मनुष्य की नाक में जीवन की साँस फूँकी और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया।" पेज 24

उत्पत्ति 2:8-9 „तब यहोवा परमेश्वर ने पूरब में अदन नामक जगह में एक बाग लगाया। यहोवा परमेश्वर ने अपने बनाए मनुष्य को इसी बाग में रखा। यहोवा परमेश्वर ने हर एक सुन्दर पेड़ और भोजन के लिए सभी अच्छे पेड़ों को उस बाग में उगाया। बाग के बीच में परमेश्वर ने जीवन के पेड़ को रखा और उस पेड़ को भी रखा जो अच्छे और बुरे की जानकारी देता है " पेज 6

उत्पत्ति 2:16-17 „यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, "तुम बगीचे के किसी भी पेड़ से फल खा सकते हो। लेकिन तुम अच्छे और बुरे की जानकारी देने वाले पेड़ का फल नहीं खा सकते। यदि तुमने उस पेड़ का फल खा लिया तो तुम मर जाओगे।" पेज 6

उत्पत्ति 3:2-6 „स्त्री ने कहा, "नहीं परमेश्वर ने यह नहीं कहा। हम बाग़ के पेड़ों से फल खा सकते है। लेकिन एक पेड़ है जिसके फल हम लोग नहीं खा सकते । परमेश्वर ने हम लोगों से कहा, 'बाग के बीच के पेड़ के फल तुम नहीं खा सकते, तुम उसे छूना भी नहीं, नहीं तो मर जाओगे।'" लेकिन साँप ने स्त्री से कहा, "तुम मरोगी नहीं। परमेश्वर जानता है कि यदि तुम लोग उस पेड़ से फल खाओगे तो अच्छे और बुरे के बारे में जान जाओगे और तब तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे। " स्त्री ने देखा कि पेड़ सुन्दर है। उसने देखा कि फल खाने के लिए अच्छा है और पेड़ उसे बुद्धिमान बनाएगा। तब स्त्री ने पेड़ से फल लिया और उसे खाया। उसका पति भी उसके साथ था इसलिए उसने कुछ फल उसे दिया और उसने उसे खाया। " पेज 6

उत्पत्ति 3:23 " तब यहोवा परमेश्वर ने पुरुष को अदन के बाग छोड़ने के लिए मजबूर किया। जिस मिट्टी से आदम बना था उस पृथ्वी पर आदम को कड़ी मेहनत करनी पड़ी।" पेज 6

1 कुरिन्थियों 2:16 "प्रभु के मन को किसने जाना? उसको कौन सिखाए?" किन्तु हमारे पास यीशु का मन है। पेज 22

1 कुरिन्थियों 3:16 „क्या तुम नहीं जानते कि तुम लोग स्वयं परमेश्वर का मन्दिर हो और परमेश्वर की आत्मा तुममें निवास करती है?" पेज 24,25

1 कुरिन्थियों 6:17 „किन्तु वह जो अपनी लौ प्रभु से लगाता है, उसकी आत्मा में एकाकार हो जाता है।" पेज 15,16,24

1 कुरिन्थियों 6:19-20 „अथवा क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर उस पवित्र आत्मा के मन्दिर है जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है और जो तुम्हारे भीतर निवास करता है। और वह आत्मा तुम्हारा अपना नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें कीमत चुका कर खरीदा है। इसलिए अपने शरीरों के द्वारा परमेश्वर को महिमा प्रदान करो।" पेज 25

1 कुरिन्थियों 15:22 „क्योंकि ठीक वैसे ही जैसे आदम के कर्मों के कारण हर किसी के लिए मृत्यु आयी, वैसे ही मसीह के द्वारा सब को फिर से जिला उठाया जायेगा" पेज 17,23

1 कुरिन्थियों 15:45-46 „शास्त्र कहता है: "पहला मनुष्य (आदम) एक सजीव प्राणी बना।" किन्तु अंतिम आदम (मसीह) जीवनदाता आत्मा बना। आध्यात्मिक पहले नहीं आता, बल्कि पहले आता है भौतिक और फिर उसके बाद ही आता है आध्यात्मिक।" पेज 6

1 कुरिन्थियों 15:57 „किन्तु परमेश्वर का धन्यवाद है जो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय दिलाता है।" पेज 8

2 कुरिन्थियों 5:16-21 „परिणामस्वरूप अब से आगे हम किसी भी व्यक्ति को सांसारिक दृष्टि से न देखें यद्यपि एक समय हमने मसीह को भी सांसारिक दृष्टि से देखा था। कुछ भी हो, अब हम उसे उस प्रकार नहीं देखते। इसलिए यदि कोई मसीह में स्थित है तो अब वह परमेश्वर की नयी सृष्टि का अंग है। पुरानी बातें जाती रही है। सब कुछ नया हो गया है और फिर ये सब बातें उस परमेश्वर की ओर से हुआ करती है, जिसने हमें मसीह के द्वारा अपने में मिला लिया है और लोगों को परमेश्वर से मिलाप का काम हमें सौंपा है। हमारा संदेश है कि परमेश्वर लोगों के पापों की अनदेखी करते हुए मसीह के द्वारा उन्हें अपने में मिला रहा है और उसी ने मनुष्य को परमेश्वर से मिलाने का संदेश हमें सौंपा है। इसलिये हम मसीह के प्रतिनिधि के रूप में काम कर रहे है। मानो परमेश्वर हमारे द्वारा तुम्हें चेता रहा है। मसीह की ओर से हम तुमसे विनती करते है कि परमेश्वर के साथ मिल जाओ। जो पाप रहित है, उसे उसने इसलिए पाप-बली बनाया कि हम उसके द्वारा परमेश्वर के सामने नेक ठहराये जायें।" पेज 25

2 कुरिन्थियों 5:17 „इसलिए यदि कोई मसीह में स्थित है तो अब वह परमेश्वर की नयी सृष्टि का अंग है। पुरानी बातें जाती रही है। सब कुछ नया हो गया है" पेज 20

2 कुरिन्थियों 5:18 „और फिर ये सब बातें उस परमेश्वर की ओर से हुआ करती है, जिसने हमें मसीह के द्वारा अपने में मिला लिया है और लोगों को परमेश्वर से मिलाप का काम हमें सौंपा है।" पेज 8

कुलुस्सियों 1:15 „वह अदृश्य परमेश्वर का, दृश्य रूप है।, वह सारी सृष्टि का सिरमौर है।„ पेज 1,2
कुलुस्सियों 1:27 „परमेश्वर अपने संत जनों को यह प्रकट कर देना चाहता था कि वह रहस्यपूर्ण सत्य कितना वैभवपूर्ण है। उसके पास यह रहस्यपूर्ण सत्य सभी के लिये है। और वह रहस्यपूर्ण सत्य यह है कि मसीह तुम्हारे भीतर ही रहता है और परमेश्वर की महिमा प्राप्त करने के लिये वही हमारी एक मात्र आशा है।„ पेज 25
कुलुस्सियों 2:6-7 „इसलिए तुमने जैसे यीशु को मसीह और प्रभु के रूप में ग्रहण किया है, तुम उसमें वैसे ही बने रहो। तुम्हारी जड़े उसी में हो और तुम्हारा निर्माण उसी पर हो तथा तुम अपने विश्वास में दृढ़ता पाते रहो जैसा कि तुम्हें सिखाया गया है। परमेश्वर के प्रति अत्यधिक आभारी बनो।„पेज 15,16
कुलुस्सियों 2:9 „क्योंकि परमेश्वर अपनी सम्पूर्णता के साथ सदैव उसी में निवास करता है।“ पेज 1,2
कुलुस्सियों 2:10 „और उसी में स्थिति होकर तुम परिपूर्ण बने हो। वह हर शासक और अधिकारी का शिरोमणि है।“पेज18
कुलुस्सियों 2:12-14 „यह इसलिए हुआ कि जब तुम्हें बपतिस्मा में उसके साथ गाड़ दिया गया तो जिस परमेश्वर ने उसे मरे हुओं के बीच से जिला दिया था, उस परमेश्वर के कार्य में तुम्हारे विश्वास के कारण, उसी के साथ तुम्हें भी पुनःजीवित कर दिया गया।
अपने पापों और अपने खतना रहित शरीर के कारण तुम मरे हुए थे किन्तु तुम्हें परमेश्वर ने मसीह के साथ-साथ जीवन प्रदान किया तथा हमारे सब पापों को मुक्त रूप से क्षमा कर दिया। परमेश्वर ने उस अभिलेख को हमारे बीच में से हटा दिया जिसमें उन विधियों का उल्लेख किया गया था जो हमारे प्रतिकूल और हमारे विरुद्ध था। उसने उसे कीलों से क्रूस पर जड़कर मिटा दिया है।“ पेज 19
कुलुस्सियों 3:1-3 „क्योंकि यदि तुम्हें मसीह के साथ मरे हुओं में से जिला कर उठाया गया है तो उन वस्तुओं के लिये प्रयत्नशील रहो जो स्वर्ग में है जहाँ परमेश्वर की दाहिनी ओर मसीह विराजित है। स्वर्ग की वस्तुओं के सम्बन्ध में ही सोचते रहो। भौतिक वस्तुओं के सम्बन्ध में मत सोचो। क्योंकि तुम लोगों का पुराना व्यक्तित्व मर चुका है और तुम्हारा नया जीवन मसीह के साथ साथ परमेश्वर में छिपा है।“ पेज 19
कुलुस्सियों 4:5-6 „बाहर के लोगों के साथ विवेकपूर्ण व्यवहार करो। हर अवसर का पूरा-पूरा उपयोग करो। तुम्हारी बोली सदा मीठी रहे और उससे बुद्धि की छटा बिखरे ताकि तुम जान लो कि किसि व्यक्ति को कैसे उत्तर देना है।“पेज 36
गलातियों 1:15-16 „किन्तु परमेश्वर ने तो मेरे जन्म से पहले ही मुझे चुन लिया था और अपने अनुग्रह में मुझे बुला लिया था। ताकि वह मुझे अपने पुत्र का ज्ञान करा दे जिससे मै गैर यहूदियों के बीच उसके सुसमाचार का प्रचार करूँ। उस समय तत्काल मैने किसी मनुष्य से कोई राय नही ली।“ पेज 8
गलातियों 2:20 „इसी से अब आगे मै जीवित नही हूँ किन्तु मसीह मुझ में जीवित है। सो इस शरीर में अब मै जिस जीवन को जी रहा हूँ, वह तो विश्वास पर टिका है। परमेश्वर के उस पुत्र के प्रति विश्वास पर जो मुझसे प्रेम करता था, और जिसने अपने आप को मेरे लिए अर्पित कर दिया।“ पेज 18
गलातियों 4:4-7 „किन्तु जब उचित अवसर आया तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो एक स्त्री से जन्मा था। और व्यवस्था के अधीन जीता था। ताकि वह व्यवस्था के अधीन व्यक्तियों को मुक्त कर सके जिससे हम परमेश्वर के गोद लिये बच्चे बन सकें। और फिर क्योंकि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, सो उसने तुम्हारे हृदयों में पुत्र की आत्मा को भेजा। वही आत्मा “ हे अब्बा, हे पिता” कहते हुए पुकारती है। इसलिए अब तू दास नही है बल्कि पुत्र है और क्योंकि तू पुत्र है, इसलिए तुझे परमेश्वर ने अपना उत्तराधिकारी भी बनाया है।“ पेज 18
गलातियों 5:16 „किन्तु मै कहता हूँ कि आत्मा के अनुशासन के अनुसार आचरण करो और अपनी पाप पूर्ण प्रकृति की इच्छाओं की पूर्ति मत करो।“ पेज 23
गलातियों 5:24 „उन लोगों ने जो यीशु मसीह के है, अपने पापपूर्ण मानव-स्वभाव को वासनाओं और इच्छाओ समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।“ पेज 17,18
1 तीमुथियुस 2:3-4 „यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है। यह उत्तम है। वह सभी व्यक्तियों का उद्धार चाहता है और चाहता है कि वे सत्य को पहचाने“पेज 40
1 तीमुथियुस 2:5-6 „क्योंकि परमेश्वर एक ही है और मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में मध्यस्थ भी एक ही है। वह स्वयं एक मनुष्य है, मसीह यीशु। 6 उसने सब लोगों के लिये स्वयं को फिरौती के रूप में दे डाला है। इस प्रकार उसने उचित समय परइसकी साक्षी दी।“पेज 8,12
2 तीमुथियुस 1:7 „क्योंकि परमेश्वर ने हमें जो आत्मा दी है, वह हमें कायर नही बनाती बल्कि हमें प्रेम, संयम और शक्ति से भर देती है।“पेज 21
1 थिस्सलुनीकियों 1:6-8 „कठोर यातनाओं के बीच तुमने पवित्र आत्मा से मिलने वाली प्रसन्नता के साथ सुसंदेश को ग्रहण किया और हमारा तथा प्रभु का अनुकरण करने लगे। इसलिए मकदुनिया और अखाया के सभी विश्वासियों के लिये तुम एक आदर्श बन गये योंकि तुमसे प्रभु के संदेश की जो गूँज उठी, वह न केवल मकदुनिया और अखाया में सुनी गयी बल्कि परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास सब कही जाना माना गया। सो हमें कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है। “पेज 36
1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24 „शांति का स्रोत परमेश्वर स्वयं तुम्हें पूरी तरह पवित्र करे। पूरी तरह उसको समर्पित हो जाओ और तुम अपने सम्पूर्ण अस्तित्व अर्थात् आत्मा, प्राण और देह को हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूर्णतः दोष रहित बनाए रखो। वह परमेश्वर जिसने तुम्हें बुलाया है, विश्वास के योग्य है। निश्चयपूर्वक वह ऐसा ही करेगा। “पेज 24,25

नीतिवचन 14:12 „ऐसी भी राह होती है जो मनुष्य को उचित जान पड़ती है; किन्तु परिणाम में वह मृत्यु को ले जाती।“ पेज 11
प्रेरितों के काम 1:8 “ बल्कि जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा, तुम्हें शक्ति प्राप्त हो जायेगी, और यरूशलेम में, समूचे यहूदिया और सामरिया में और धरती के छोरों तक तुम मेरे साक्षी बनोगे।” पेज 40
प्रेरितों के काम 4:12 „ किसी भी दूसरे में उद्धार निहित नहीं है। क्योंकि इस आकाश के नीचे लोगों को कोई दूसरा ऐसा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो पाये।” पेज 8
प्रेरितों के काम 9:28 „फिर शाऊल उनके साथ यरूशलेम में स्वतन्त्रतापूर्वक आते जाते रहने लगा। वह निर्भीकता के साथ प्रभु के नाम का प्रवचन किया करता था।„ पेज 40
प्रकाशित वाक्य 3:20 „सुन, मैं द्वार पर खड़ा हूँ और खटखटा रहा हूँ। यदि कोई मेरी आवाज़ सुनता है और द्वार खोलता है तो मैं उसके घर में प्रवेश करूँगा तथा उसके साथ बैठकर खाना खाऊँगा और वह मेरे साथ बैठकर खाना खाएगा।“ पेज 9
प्रकाशित वाक्य 12:11 „उन्होंने मेमने के बलिदान के रक्त और उनके द्वारा दी गई साक्षी से उसे हरा दिया है। उन्होंने अपने प्राणों का परित्याग करने तक अपने जीवन की परवाह नहीं की।“पेज 36
प्रकाशित वाक्य 19:10 „और मैं उसकी उपासना करने के लिए उसके चरणों में गिर पड़ा। किन्तु वह मुझसे बोला, “सावधान! ऐसा मत कर। मैं तो तेरे और तेरे बधुंओं के साथ परमेश्वर का संगी सेवक हूँ जिन पर यीशु के द्वारा साक्षी दिए गए सन्देश के प्रचार का दायित्व है। परमेश्वर की उपासना कर क्योंकि यीशु के द्वारा प्रमाणित सन्देश इस बात का प्रमाण है कि उनमें एक नबी की आत्मा है।“पेज 36
प्रकाशित वाक्य 21:2 „मैंने यरूशलेम की वह पवित्र नगरी भी आकाश से बाहर निकल कर परमेश्वर की ओर से नीचे उतरते देखी। उस नगरी को ऐसे सजाया गया था जैसे मानों किसी दुल्हन को उसके पति के लिए सजाया गया हो।“पेज 20
1 पतरस 1:18-19 „तुम यह जानते हो कि चाँदी या सोने जैसी वस्तुओं से तुम्हें उस व्यर्थ जीवन से छुटकारा नहीं मिल सकता, जो तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों से मिला है। बल्कि वह तो तुम्हें निर्दोष और कलंक रहित मेमने के समान मसीह के बहुमूल्य रक्त से ही मिल सकता है।“ पेज 25
1 पतरस 2:24 „उसने क्रूस पर अपनी देह में हमारे पापों को ओढ़ लिया। ताकि अपने पापों के प्रति हमारी मृत्यु हो जाये और जो कुछ नेक है उसके लिए हम जीयें। यह उसके उन घावों के कारण ही हुआ जिनसे तुम चंगे किये गये हो।“ पेज 4
1 पतरस 3:15 „अपने मन में मसीह को प्रभु के रूप में आदर दो। तुम सब जिस विश्वास को रखते हो, उसके विषय में यदि कोई तुमसे पूछे तो उसे उत्तर देने के लिए सदा तैयार रहो।“ पेज 36
1 पतरस 3:18 „क्योंकि मसीह ने भी हमारे पापों के लिए दुःख उठाया। अर्थात् वह जो निर्दोष था हम पापियों के लिये एक बार मर गया कि हमें परमेश्वर के समीप ले जाये। शरीर के भाव से तो वह मारा गया पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।“ पेज 12
फिलिप्पियों 2:5-8 „अपना चिंतन ठीक वैसा ही रखो जैसा मसीह यीशु का था। जो अपने स्वरूप में यद्यपि साक्षात् परमेश्वर था,किन्तु उसने परमेश्वर के साथ अपनी इस समानता को कभी ऐसे महाकोष के समान नहीं समझा जिससे वह चिपका ही रहे। बल्कि उसने तो अपना सब कुछ त्याग कर एक सेवक का रूप ग्रहण कर लिया और मनुष्य के समान बन गया। और जब वह अपने बाहरी रूप में मनुष्य जैसा बन गया तो उसने अपने आप को नवा लिया। और इतना आज्ञाकारी बन गया कि अपने प्राण तक निछावर कर दिये और वह भी क्रूस पर।“ पेज 1,2,22,25
फिलिप्पियों 3:20 „किन्तु हमारी जन्मभूमि तो स्वर्ग में है। वहीं से हम अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आने की बाट जोह रहे हैं।“ पेज 20,22,23
फिलिप्पियों 4:6-7 „किसी बात कि चिंता मत करो, बल्कि हर परिस्थिति में धन्यवाद सहित प्रार्थना और विनय के साथ अपनी याचना परमेश्वर के सामने रखते जाओ। इसी से परमेश्वर की ओर से मिलने वाली शांति, जो समझ से परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारी बुद्धि को मसीह यीशु में सुरक्षित बनाये रखेगी।“ पेज 26
भजन संहिता 16:11 „तू मुझे जीवन की नेक राह दिखायेगा। हे यहोवा, तेरा साथ भर मुझे पूर्ण प्रसन्नता देगा। तेरे दाहिने ओर होना सदा सर्वदा को आनन्द देगा।“ पेज 20
भजन संहिता 40:3 „यहोवा ने मेरे मुँह में एक नया गीत बसाया। परमेश्वर का एक स्तुति गीत। बहुतेरे लोग देखेंगे जो मेरे साथ घटा है। और फिर परमेश्वर की आराधना करेंगे। वे यहोवा का विश्वास करेंगे।“ पेज 36
मत्ती 1:20-23 „किन्तु जब वह इस बारे में सोच ही रहा था, सपने में उसके सामने प्रभु के दूत ने प्रकट होकर उससे कहा, “ओ! दाऊद के पुत्र यूसुफ, मरियम को पत्नी बनाने से मत डर क्योंकि जो बच्चा उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह एक पुत्र को जन्म देगी। तू उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार करेगा।” यह सब कुछ इसलिये हुआ है कि प्रभु ने भविष्यवक्ता द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो: “सुनो, एक कुँवारी कन्या गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म देगी। उसका नाम इम्मानुएल रखा जायेगा।“ पेज 1
मत्ती 3:13-17 „उस समय यीशु गलील से चल कर यर्दन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। किन्तु यूहन्ना ने यीशु को रोकने का यत्न करते हुए कहा, “मुझे तो स्वयं

तुझ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है। फिर तू मेरे पास क्यों आया है?" उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "अभी तो इसे इसी प्रकार होने दो। हमें, जो परमेश्वर चाहता है उसे पूरा करने के लिए यही करना उचित है।" फिर उसने वैसा ही होने दिया। और तब यीशु ने बपतिस्मा ले लिया। जैसे ही वह जल से बाहर निकला, आकाश खुल गया। उसने परमेश्वर की आत्मा को एक कबूतर की तरह नीचे उतरते और अपने ऊपर आते देखा। तभी यह आकाशवाणी हुई: "यह मेरा प्रिय पुत्र है। जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ।" पेज 3,26

मत्ती 4:19-20 „यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि लोगों के लिये मछलियाँ पकड़ने के बजाय मनुष्य रूपी मछलियाँ कैसे पकड़ी जाती हैं।" उन्होंने तुरंत अपने जाल छोड़ दिये और उसके पीछे हो लिये।" पेज 40

मत्ती 7:7-8 „परमेश्वर से माँगते रहो, तुम्हें दिया जायेगा। खोजते रहो तुम्हें प्राप्त होगा खटखटाते रहो तुम्हारे लिए द्वार खोल दिया जायेगा।   क्योंकि हर कोई जो माँगता ही रहता है, प्राप्त करता है। जो खोजता है पा जाता है और जो खटखटाता ही रहता है उसके लिए द्वार खोल दिया जाएगा।" पेज 26

मत्ती 7:13-14 „सूक्ष्म मार्ग से प्रवेश करो। यह मैं तुम्हें इसलिये बता रहा हूँ क्योंकि चौड़ा द्वार और बड़ा मार्ग तो विनाश की ओर ले जाता है। बहुत से लोग हैं जो उस पर चल रहे हैं। किन्तु कितना सँकरा है वह द्वार और कितनी सीमित है वह राह जो जीवन की ओर जाती है। बहुत थोड़े से हैं वे लोग जो उसे पा रहे हैं।" पेज 23

मत्ती 7:28-29 „परिणाम यह हुआ कि जब यीशु ने ये बातें कह कर पूरी कीं, तो उसके उपदेशों पर लोगों की भीड़ को बड़ा अचरज हुआ। क्योंकि वह उन्हें यहूदी धर्म नेताओं के समान नहीं बल्कि एक अधिकारी के समान शिक्षा दे रहा था।
" पेज 3

मत्ती 10:32 „जो कोई मुझे सब लोगों के सामने अपनायेगा, मैं भी उसे स्वर्ग में स्थित अपने परम-पिता के सामने अपनाऊँगा।" पेज 40

मत्ती 26:28 „क्योंकि यह मेरा लहू है जो एक नये वाचा की स्थापना करता है। यह बहुत लोगों के लिये बहाया जा रहा है। ताकि उनके पापों को क्षमा करना सम्भव हो सके।" पेज 4

मत्ती 27:57-61 „साँझ के समय अरमितियाह नगर से यूसुफ़ नाम का एक धनवान आया। वह खुद भी यीशु का अनुयायी हो गया था।   यूसुफ पिलातुस के पास गया और उससे यीशु का शव माँगा। तब पिलातुस ने आज्ञा दी कि शव उसे दे दिया जाये।   यूसुफ ने शव ले लिया और उसे एक नयी चादर में लपेट कर   अपनी निजी नयी कब्र में रख दिया जिसे उसने चट्टान में काट कर बनवाया था। फिर उसने चट्टान के दरवाज़े पर एक बड़ा सा पत्थर लुढ़काया और चला गया। मरियम मगदलीनी और दूसरी स्त्री मरियम वहाँ कब्र के सामने बैठी थी।" पेज 4

मरकुस 6:2-3 „जब सब्त का दिन आया, उसने आराधनालय में उपदेश देना आरम्भ किया। उसे सुनकर बहुत से लोग आश्चर्यचकित हुए। वे बोले, "इसको ये बातें कहाँ से मिली हैं? यह कैसी बुद्धिमानी है जो इसको दी गयी है? यह ऐसे आश्चर्य कर्म कैसे करता है? क्या यह वही बढ़ई नहीं है जो मरियम का बेटा है, और क्या यह याकूब, योसेस, यहूदा और शमौन का भाई नहीं है? क्या ये जो हमारे साथ रहती है इसकी बहनें नहीं हैं?" सो उन्हें उसे स्वीकार करने में समस्या हो रही थी।" पेज 3

याकूब 5:16 " इसलिए अपने पापों को परस्पर स्वीकार और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो ताकि तुम भले चंगे हो जाओ। धार्मिक व्यक्ति की प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण होती है।" पेज 26

यूहन्ना 1:14 „उस आदि शब्द ने देह धारण कर हमारे बीच निवास किया। हमने परम पिता के एकमात्र पुत्र के रूप में उसकी महिमा का दर्शन किया। वह करुणा और सत्य से पूर्ण था।" पेज 1,2

यूहन्ना 3:6 „माँस से केवल माँस ही पैदा होता है; और जो आत्मा से उत्पन्न हो वह आत्मा है।" पेज 19,24

यूहन्ना 3:16 „परमेश्वर को जगत से इतना प्रेम था कि उसने अपने एकमात्र पुत्र को दे दिया, ताकि हर वह आदमी जो उसमें विश्वास रखता है, नष्ट न हो जाये बल्कि उसे अनन्त जीवन मिल जाये।" पेज 12

यूहन्ना 9:25 „इस पर उसने जवाब दिया, "मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं, मैं तो बस यह जानता हूँ कि मैं अंधा था, और अब देख सकता हूँ।" " पेज 36

यूहन्ना 10:10 „चोर केवल चोरी, हत्या और विनाश के लिये ही आता है। किन्तु मैं इसलिये आया हूँ कि लोग भरपूर जीवन पा सकें।" पेज 9

यूहन्ना 10:30 „मेरा पिता और मैं एक हैं।"" पेज 1,2

यूहन्ना 11:25-26 „यीशु ने उससे कहा, "मैं ही पुनरुत्थान हूँ और मैं ही जीवन हूँ। वह जो मुझमें विश्वास करता है जियेगा। 26 और हर वह, जो जीवित है और मुझमें विश्वास रखता है, कभी नहीं मरेगा। क्या तू यह विश्वास रखती है।"
" पेज 15,16,19

यूहन्ना 12:17 „उसके साथ जो भीड़ थी उसने यह साक्षी दी कि उसने लाज़र की कब्र से पुकार कर मरे हुओं में से पुनर्जीवित किया।" पेज 36

यूहन्ना 14:6-7 „यीशु ने उससे कहा, "मैं ही मार्ग हूँ, सत्य हूँ और जीवन हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई भी परम पिता के पास नहीं आता। यदि तूने मुझे जान लिया होता तो तू परम पिता को भी जानता। अब तू उसे जानता है और उसे देख भी चुका है।
" पेज 13,15,16

यूहन्ना 14:13-14 „और मैं वह सब कुछ करूँगा जो तुम लोग मेरे नाम से माँगोगे जिससे पुत्र के द्वारा परम पिता महिमावान हो। यदि तुम मुझसे मेरे नाम में कुछ माँगोगे तो मैं उसे करूँगा।" पेज 26

यूहन्ना 14:20 उस दिन तुम जानोगे कि मैं परम पिता में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुझमें। पेज 18,19

यूहन्ना 14:20 उस दिन तुम जानोगे कि मैं परम पिता में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुझमें। पेज 18,19
यूहन्ना 15:7 „यदि तुम मुझमें रहो, और मेरे उपदेश तुम में रहें, तो जो कुछ तुम चाहते हो माँगो, वह तुम्हें मिलेगा।“ पेज 26
यूहन्ना 15:16 „“तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना है और नियत किया है कि तुम जाओ और सफल बनो। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी सफलता बनी रहे ताकि मेरे नाम में जो कुछ तुम चाहो, परम पिता तुम्हें दे।“ पेज 40
यूहन्ना 16:28 „मैं परम पिता से प्रकट हुआ और इस जगत में आया। और अब मैं इस जगत को छोड़कर परम पिता के पास जा रहा हूँ।“ पेज 5
यूहन्ना 16:33 „मैंने ये बातें तुमसे इसलिये कही कि मेरे द्वारा तुम्हें शांति मिले। जगत में तुम्हें यातना मिली है किन्तु साहस रखो, मैंने जगत को जीत लिया है।“ पेज 10
1 यूहन्ना 1:7 „किन्तु यदि हम अब प्रकाश में आगे बढ़ते हैं क्योंकि प्रकाश में ही परमेश्वर है-तो हम विश्वासी के रूप में एक दूसरे के सहभागी हैं, और परमेश्वर के पुत्र यीशु का लहू हमें सभी पापों से शुद्ध कर देता है।“ पेज 4
1 यूहन्ना 1:9 „यदि हम अपने पापों को स्वीकार कर लेते हैं तो हमारे पापों को क्षमा करने के लिए परमेश्वर विश्वसनीय है और न्यायपूर्ण है और समुचित है। तथा वह सभी पापों से हमें शुद्ध करता है।“ पेज 26
1 यूहन्ना 3:1-3 „विचार कर देखो कि परम पिता ने हम पर कितना महान प्रेम दर्शाया है! ताकि हम उसके पुत्र-पुत्री कहला सकें और वास्तव में वे हम हैं ही। इसलिए संसार हमें नहीं पहचानता क्योंकि वह मसीह को नहीं पहचानता। हे प्रिय मित्रो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं किन्तु भविष्य में हम क्या होंगे, अभी तक इसका बोध नहीं कराया गया है। जो भी हो, हम यह जानते हैं कि मसीह के पुनः प्रकट होने पर हम उसी के समान हो जायेंगे क्योंकि वह जैसा है, हम उसे ठीक वैसा ही देखेंगे। हर कोई जो उस पर ऐसी आशा रखता है, वह अपने आपको वैसे ही पवित्र करता है जैसे मसीह पवित्र है।“ पेज 25
1 यूहन्ना 3:9-10 „जो परमेश्वर की सन्तान बन गया, पाप नहीं करता रहता, क्योंकि उसका बीज तो उसी में रहता है। सो वह पाप करता नहीं रह सकता क्योंकि वह परमेश्वर की संतान बन चुका है। परमेश्वर की संतान कौन है? और शैतान के बच्चे कौन से
हैं? तुम उन्हें इस प्रकार जान सकते हो: प्रत्येक वह व्यक्ति जो धर्म पर नहीं चलता और अपने भाई को प्रेम नहीं करता, परमेश्वर का नहीं है।“ पेज 25
1 यूहन्ना 5:12-13 „वह जो उसके पुत्र को धारण करता है, उस जीवन को धारण करता है। किन्तु जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास वह जीवन भी नहीं है। परमेश्वर में विश्वास रखने वालो, तुमको ये बातें मैं इसलिए लिख रहा हूँ जिससे तुम यह जान लो कि अनन्त जीवन तुम्हारे पास है। “ पेज 15,16
1 यूहन्ना 5:18-19 „हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर का पुत्र बन गया, वह पाप नहीं करता रहता। बल्कि परमेश्वर का पुत्र उसकी रक्षा करता रहता है। वह दुष्ट उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाता। हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं। यद्यपि यह समूचा संसार उस दुष्ट के वश में है।“ पेज 17
यहेजकेल 36:26-27 „परमेश्वर ने कहा, “मैं तुम में नयी आत्मा भी भरूँगा और तुम्हारे सोचने के ढंग को बदलूँगा। मैं तुम्हारे शरीर से कठोर हृदय को बाहर करुंगा और तुम्हें एक कोमल मानवी हृदय दूँगा। मैं तुम्हारे भीतर अपनी आत्मा प्रतिष्ठित करूँगा। मैं तुम्हें बदलूँगा जिससे तुम मेरे नियमों का पालन करोगे। तुम सावधानी से मेरे आदेशों का पालन करोगे।“ पेज 8
यहोशू 1:8 „उस व्यवस्था की किताब में लिखी गई बातों को सदा याद रखो। तुम उस किताब का अध्ययन दिन रात करो, तभी तुम उसमें लिखे गए आदेशों के पालन के विषय में विश्वस्त रह सकते हो। यदि तुम यह करोगे, तो तुम बुद्धिमान बनोगे और जो कुछ करोगे उसमें सफल होगे।“ पेज 26
रोमियों 3:23 „क्योंकि सभी ने पाप किये है और सभी परमेश्वर की महिमा से रहित है।“पेज 7,11
रोमियों 5:1-2 „क्योंकि हम अपने विश्वास के कारण परमेश्वर के लिए धर्मी हो गये है, सो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल हो गया है। उसी के द्वारा विश्वास के कारण उसकी जिस अनुग्रह में हमारी स्थिति है, उस तक हमारी पहुँच हो गयी है। और हम परमेश्वर की महिमा का कोई अंश पाने की आशा का आनन्द लेते है।“पेज 10,12
रोमियों 5:5 „और आशा हमें निराश नहीं होने देती क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हमें दिया गया है, परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय में उँडेल दिया गया है।“पेज 19
रोमियों 5:6 „क्योंकि हम जब अभी निर्बल ही थे तो उचित समय पर हम भक्तिहीनों के लिए मसीह ने अपना बलिदान दिया। “पेज 4
रोमियों 5:9 „क्योंकि अब जब हम उसके लहू के कारण धर्मी हो गये है तो अब उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से अवश्य ही बचाये जायेंगे।“पेज 8
रोमियों 5:11 „इतना ही नहीं है हम अपने प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर की भक्ति पाकर अब उसमें आनन्द लेते हैं“पेज20
रोमियों 5:12 „इसलिए एक व्यक्ति (आदम) के द्वारा जैसे धरती पर पाप आया और पाप से मृत्यु और इस प्रकार मृत्यु सब लोगों के लिए आयी क्योंकि सभी ने पाप किये थे।“पेज 7
रोमियों 5:18-19 „सो जैसे एक अपराध के कारण सभी लोगों को दोषी ठहराया गया, वैसे ही एक धर्म के काम के द्वारा सब के लिए परिणाम में अनन्त जीवन प्रदान करने वाली धार्मिकता मिली। अतः जैसे उस एक व्यक्ति के आज्ञा न मानने के कारण सब लोग पापी बना दिये गये वैसे ही उस व्यक्ति की आज्ञाकारिता के कारण सभी लोग धर्मी भी बना दिये जायेंगे।“पेज 7,17

रोमियों 6:4-6 „सो उसकी मृत्यु में बपतस्मिा लेने से हम भी उसके साथ ही गाड़ दयि गये थे ताकि जैसे परमपति की महिमामय शक्ति के द्वारा यीशु मसीह को मरे हुओं में से जलि दयि गया था, वैसे ही हम भी एक नया जीवन पायें। क्योंकि जब हम उसकी मृत्यु में उसके साथ रहे हैं तो उसके जैसे पुनरुत्थान में भी उसके साथ रहेंगे। हम यह जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तित्व यीशु के साथ ही क्रूस पर चढ़ा दयि गया था ताकि पाप से भरे हमारे शरीर नष्ट हो जायें। और हम आगे के लयि पाप के दास न बने रहें।“पेज 18,19

रोमियों 6:11-13 „इसी तरह तुम अपने लिए भी सोचो कि तुम पाप के लिए मर चुके हो किन्तु यीशु मसीह में परमेश्वर के लिए जीवति हो। इसलिए तुम्हारे नाशवान् शरीरों के ऊपर पाप का वश न चले। ताकि तुम पाप की इच्छाओं पर कभी न चलो। अपने शरीर के अंगों को अधर्म की सेवा के लिए पाप के हवाले न करो बल्कि मरे हुओं में से जी उठने वालों के समान परमेश्वर के हवाले कर दो। और अपने शरीर के अंगों को धार्मकिता की सेवा के साधन के रूप में परमेश्वर के हवाले कर दो। “पेज 25

रोमियों 6:16 „क्या तुम नहीं जानते कि जब तुम किसी की आज्ञा मानने के लिए अपने आप को दास के रूप में उसे सौंपते हो तो तुम दास हो। फरि चाहे तुम पाप के दास बनो, जो तुम्हें मार डालेगा और चाहे आज्ञाकारिता के, जो तुम्हें धार्मकिता की तरफ ले जायेगी।“पेज 9,23

रोमियों 6:21 „और देखो उस समय तुम्हें कैसा फल मलि? जिसके लिए आज तुम शर्मन्दिा हो, जिसका अंतमि परणिाम मृत्यु है।“पेज 9

रोमियों 6:23 „क्योंकि पाप का मूल्य तो बस मृत्यु ही है जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन, परमेश्वर का सेंतमेंतका वरदान है।“पेज 11

रोमियों 7:14-25 „क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मकि है और मैं हाड़-माँस का भौतकि मनुष्य हूँ जो पाप की दासता के लिए बकि हुआ है। मैं नहीं जानता मैं क्या कर रहा हूँ क्योंकि मैं जो करना चाहता हूँ, नहीं करता, बल्कि मुझे वह करना पड़ता है, जिससे मैं घृणा करता हूँ। और यदि मैं वही करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो मैं स्वीकार करता हूँ कि व्यवस्था उत्तम है। किन्तु वास्तव में वह मैं नहीं हूँ जो यह सब कुछ कर रहा है, बल्कि यह मेरे भीतर बसा पाप है। हाँ, मैं जानता हूँ कि मुझ में यानी मेरे भौतकि मानव शरीर में किसी अच्छी वस्तु का वास नहीं है। नेकी करने के इच्छा तो मुझ में है पर नेक काम मुझ से नहीं होते। क्योंकि जो अच्छा काम मैं करना चाहता हूँ, मैं नहीं करता बल्कि जो मैं नहीं करना चाहता, वे ही बुरे काम मैं करता हूँ। और यदि मैं वही काम करता हूँ जिन्हें करना नहीं चाहता तो वास्तव में उनका कर्ता जो उन्हें कर रहा है, मैं नहीं हूँ, बल्कि वह पाप है जो मुझ में बसा है। इसलिए मैं अपने में यह नयिम पाता हूँ कि मैं जब अच्छा करना चाहता हूँ, तो अपने में बुराई को ही पाता हूँ। अपनी अन्तरात्मा में मैं परमेश्वर की व्यवस्था को सहर्ष मानता हूँ। पर अपने शरीर में मैं एक दूसरे ही नयिम को काम करते देखता हूँ यह मेरे चन्तिन पर शासन करने वाली व्यवस्था से युद्ध करता है और मुझे पाप की व्यवस्था का बंदी बना लेता है। यह व्यवस्था मेरे शरीर में क्रयिाशील है। मैं एक अभागा इंसान हूँ। मुझे इस शरीर से, जो मौत का नविाला है, छुटकारा कौन दलियेगा? अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। सो अपने हाड़ माँस के शरीर से मैं पाप की व्यवस्था का गुलाम होते हुए भी अपनी बुद्धि से परमेश्वर की व्यवस्था का सेवक हूँ।“पेज 23

रोमियों 8:1-2 „इस प्रकार अब उनके लयि जो यीशु मसीह में स्थति है, कोई दण्ड नहीं है। [क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार चलते है।] क्योंकि आत्मा की व्यवस्था ने जो यीशु मसीह में जीवन देती है, तुझे पाप की व्यवस्था से जो मृत्यु की ओर ले जाती है, स्वतन्त्र कर दयि है।“पेज 17,23

रोमियों 8:3 „जिसे मूसा की वह व्यवस्था जो मनुष्य के भौतकि स्वभाव के कारण दुर्बल बना दी गई थी, नहीं कर सकी उसे परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे ही जैसे शरीर में भेजकर जिससे हम पाप करते है — उसकी भौतकि देह को पाप वाली बनाकर पाप को निरस्त करके पूरा कयि।“पेज 1,2,4

रोमियों 8:5-6 „क्योंकि वे जो अपने भौतकि मानव स्वभाव के अनुसार जीते है, उनकी बुद्धि मानव स्वभाव की इच्छाओं पर टकिी रहती है परन्तु वे जो आत्मा के अनुसार जीते है, उनकी बुद्धि जो आत्मा चाहती है उन अभलिाषाओं में लगी रहती है। भौतकि मानव स्वभाब के बस में रहने वाले मन का अन्त मृत्यु है, किन्तु आत्मा के वश में रहने वाली बुद्धि का परणिाम है जीवन और शान्ति।“पेज 10,22

रोमियों 8:10 „दूसरी तरफ यदि तुममें मसीह है तो चाहे तुम्हारी देह पाप के हेतु मर चुकी है पवत्रि आत्मा, परमेश्वर के साथ तुम्हें धार्मकि ठहराकर स्वयं तुम्हारे लिए जीवन बन जाती है।“पेज 19,24,25

रोमियों 8:15-17 „क्योंकि वह आत्मा जो तुम्हें मलिी है, तुम्हें फरिसे दास बनाने या डराने के लिए नहीं है, बल्कि वह आत्मा जो तुमने पाया है तुम्हें परमेश्वर की संपालति संतान बनाती है।जिस से हम पुकार उठते हैं, “ हे अब्बा, हे पिता! ” वह पवत्रि आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ मलिकर साक्षी देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। और क्योंकि हम उसकी संतान हैं, हम भी उत्तराधकिारी हैं, परमेश्वर के उत्तराधकिारी और मसीह के साथ हम उत्तराधकिारी यदि वास्तव में उसके साथ दुःख उठाते हैं तो हमें उसके साथ महमिा मलिेगी ही।“पेज 20,21

रोमियों 8:37 „तब भी उसके द्वारा जो हमें प्रेम करता है, इन सब बातों में हम एक शानदार वजिय पा रहे हैं।“पेज 9

रोमियों 10:9 „कि यदि तू अपने मुँह से कहे, “यीशु मसीह प्रभु है,” और तू अपने मन में यह वश्विास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवति कयि तो तेरा उद्धार हो जायेगा।“पेज 15,16

रोमियों 10:13 „हर कोई जो प्रभु का नाम लेता है, उद्धार पायेगा।“पेज 15,16

रोमियों 12:1 „इसलिए हे भाइयो परमेश्वर की दया का स्मरण दिलाकर मै तुमसे आग्रह करता हूँ कि अपने जीवन एक जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर को प्रसन्न करते हुए अर्पित कर दो। यह तुम्हारी आध्यात्मिक उपासना है जिसे तुम्हें उसे चुकाना है।“पेज 25
रोमियों 12:4-5 „क्योंकि जैसे हममें से हर एक के शरीर में बहुत से अंग है। चाहे सब अंगों का काम एक जैसा नही है। हम अनेक है किन्तु मसीह में हम एक देह के रूप में हो जाते है। इस प्रकार हर एक अंग हर दूसरे अंग से जुड़ जाता है। “पेज 25
लूका 1:78-79 „हमारे परमेश्वर के कोमल अनुग्रह से एक नये दिन का प्रभात हम पर ऊपर से उतरेगा। उन पर चमकने के लिये जो मौत की गहन छाया में जी रहे है ताकि हमारे चरणों को शांति के मार्ग की दिशा मिले।“ पेज 10
लूका 2:40 „उधर वह बालक बढ़ता एवं हृष्ट-पुष्ट होता गया। वह बहुत बुद्धिमान था और उस पर परमेश्वर का अनुग्रह था।“ पेज 3
लूका 2:41-47 „फ़सह पर्व पर हर वर्ष उसके माता-पिता यरूशलेम जाया करते थे। जब वह बारह साल का हुआ तो सदा की तरह वे पर्व पर गये। जब पर्व समाप्त हुआ और वे घर लौट रहे थे तो यीशु वही यरूशलेम में रह गया किन्तु माता-पिता को इसका पता नही चल पाया। यह सोचते हुए कि वह दल में कही होगा, वे दिन भर यात्रा करते रहे। फिर वे उसे अपने संबन्धियों और मित्रों के बीच खोजने लगे। और जब वह उन्हें नही मिला तो उसे ढूँढते ढूँढते वे यरूशलेम लौट आये। और फिर हुआ यह कि तीन दिन बाद वह उपदेशकों के बीच बैठा, उन्हें सुनता और उनसे प्रश्न पूछता मन्दिर में उन्हें मिला। वे सभी जिन्होंने उसे सुना था, उसकी सूझबूझ और उसके प्रश्नोत्तरों से आश्चर्यचकित थे।“ पेज 3
लूका 2:52 „उधर यीशु बुद्धि में, डील-डौल में और परमेश्वर तथा मनुष्यों के प्रेम में बढ़ने लगा।“ पेज 3
लूका 9:60 „तब यीशु ने उससे कहा, “मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, तू जा और परमेश्वर के राज्य की घोषणा कर। “ पेज 40
लूका 10:2 „वह उनसे बोला, “फसल बहुत व्यापक है किन्तु, काम करने वाले मज़दूर कम है। इसलिए फसल के प्रभु से विनती करो कि वह अपनी फसलों में मज़दूर भेजे।“ पेज 40
लूका 19:10 „क्योंकि मनुष्य का पुत्र जो कोई खो गया है, उसे ढूँढने और उसकी रक्षा के लिए आया है।“ पेज 40
लूका 24:1-7 „सप्ताह के पहले दिन बहुत सवेरे ही वे स्त्रियाँ कब्र पर उस सुगंधित सामग्री को, जिसे उन्होंने तैयार किया था, लेकर आयी। उन्हें कब्र पर से पत्थर लुढ़का हुआ मिला। सो वे भीतर चली गयी किन्तु उन्हें वहाँ प्रभु यीशु का शव नही मिला। जब वे इस पर अभी उलझन में ही पड़ी थीं कि, उनके पास चमचमाते वस्त्र पहने दो व्यक्ति आ खड़े हुए। डर के मारे उन्होंने धरती की तरफ अपने मुँह लटकाये हुए थे। उन दो व्यक्तियों ने उनसे कहा, “जो जीवित है, उसे तुम मुरदों के बीच क्यों ढूँढ रही हो? वह यहाँ नही है। वह जी उठा है। याद करो जब वह अभी गलील में ही था, उसने तुमसे क्या कहा था। उसने कहा था कि मनुष्य के पुत्र का पापियों के हाथों सौंपा जाना निश्चित है। फिर वह क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा और तीसरे दिन उसको फिर से जीवित कर देना निश्चित है।“ पेज 5
लूका 24:50-51 „यीशु फिर उन्हें बैतनियाह तक बाहर ले गया। और उसने हाथ उठा कर उन्हें आशीर्वाद दिया। उन्हें आशीर्वाद देते देते ही उसने उन्हें छोड़ दिया और फिर उसे स्वर्ग में उठा लिया गया।“ पेज 5
यहेजकेल 36:26-27 „परमेश्वर ने कहा, “मै तुम में नयी आत्मा भी भरूँगा और तुम्हारे सोचने के ढंग को बदलूँगा। मै तुम्हारे शरीर से कठोर हृदय को बाहर करुंगा और तुम्हें एक कोमल मानवी हृदय दूँगा। मै तुम्हारे भीतर अपनी आत्मा प्रतिष्ठित करूँगा। मै तुम्हें बदलूँगा जिससे तुम मेरे नियमों का पालन करोगे। तुम सावधानी से मेरे आदेशों का पालन करोगे। “ पेज 8

Additional Resources

- The Rest of the Gospel, Dan Stone and David Gregory
- Classic Christianity, Bob George
- Handbook to Happiness, Charles Solomon
- Ins and Out of Rejection, Charles Solomon
- Lifetime Guarantee, Bill Gillham
- The Normal Christian Life, Watchman Nee
- Sit Walk Stand, Watchman Nee
- Release of the Spirit, Watchman Nee
- Birthright, David Needham
- The True Vine, Andrew Murray
- Abide in Christ, Andrew Murray
- Absolute Surrender, Andrew Murray
- Victory in Christ, Charles Trumbull
- The Key to Triumphant Living, Jack Taylor
- The Saving Life of Christ, W. Ian Thomas
- The Gift of Forgiveness, Charles Stanley
- The Blessing of Brokenness, Charles Stanley
- Adversity, Charles Stanley
- Truefaced, John Lynch
- My Utmost for His Highest (Devotional), Oswald Chambers
- Forgiven Forever, Bob George
- The Grace Awakening, Charles Swindoll
- The Sufficiency of Christ, John MacArther
- Hudson Taylor's Spiritual Secret, Dr. and Mrs. Howard Taylor
- Weekly e-devotional GraceNotes, John Woodward. Available through www.GraceNotebook.com
- For Me to Live is Christ, Group study course, Charles Solomon
- The Cross, Your Victory Today, CD Series by Dr. Charles Stanley (and many other sermons by Dr. Stanley)
- The Shackling of Grace, Lee LeFebre
- The Exchanged Life Conference, CD Series by Lee LeFebre
- Free at Last, Tony Evans
- Dr. Tony Evans (most sermons)
- Gregory Dickow (most sermons)
- Romans: Chapters 5-8, Any Version of the Bible
- www.gracefellowshipintl.com
- www.thelifebookstore.com

परमेश्वर की सन्तान कैसे बने

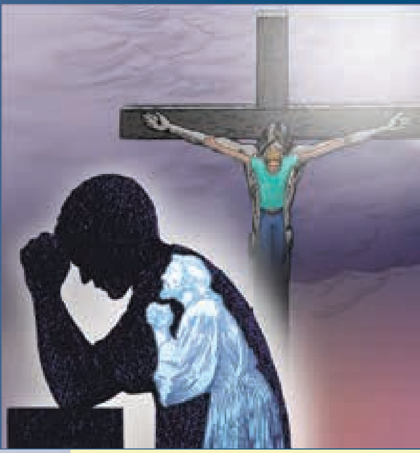

इन उल्लिखित आसान सत्योंा का अनुभव करें और यह जानेंसीखें कि सत्य और ईश्वोर में विश्वाास रखने से किस प्रकार संतुष्ट, परिपूर्ण और सफल जीवन जीया जा सकता है।

इस पुस्तकक का प्रयोग कैसे करें

• ईश्व र के साथ शांति की राहके लिए एक मार्ग और मार्गदर्शक के रूप में
• मोक्ष काके अनुभव को समझने के लिए एक साधन के रूप में
• व्यक्तिगत रूप से अथवा समूह में बाइबिल के अध्यायन के लिए
(बाइबिल के 223 छंदों का पूरा पाठ दिया गया है)
• उदाहरण और बाइबिल के छंदों का प्रयोग करते हुए 30 - दिवसीय भक्तिमय और ध्याyन गाइड के रूप में

यह िकि डेववड होवैि ईश्वर का नया जन्म पाया हुआ पुत्र है। इस पुस्तक में दी गई यह जानकारी काफी वर्षों तक आत्म-केल्न्ति और आत्म-अवशोर्षरात्मक जीवन जीने के बाद यीशु मसीह द्वारा प्रदान ककए गए अनुभव, ताकत और आशा के सार को दशाणती है। उदाहरर्, छंदों और पाठ के माध्यम से; होवैि ने दशाणया है कक कैसे यीशु मसीह पर ववश्वास और उनकी समझ और मोक्ष के अनुभव पृथ्वी पर एक सफि, पररपूर्ण और शांततपूर्ण जीवन जीने में सहायक लसद्ध हो सकता है।

"इसी से अब आगे मैं जीवित नहीं हूँ किन्तु मसीह मुझ में जीवित है। सो इस शरीर में अब मैं जिस जीवन को जी रहा हूँ, वह तो विश्वास पर टिका है। परमेश्वर के उस पुत्र के प्रति विश्वास पर जो मुझसे प्रेम करता था, और जिसने अपने आप को मेरे लिए अर्पित कर दिया।"
गलातियों 2:20

ISBN 978-0-578-14157-2
90000>